



# अटारवां

(राजस्थानी संस्मरणात्मक रेखाचित्र)

डॉ० ब्रजनारायण पुरोहित

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)-  
बीकानेर (राजस्थान)

प्रकाशक

मानद मंत्री,

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)

बीकानेर (राजस्थान)

© डॉ. अजनारायण पुरोहित

पैलो संस्करण--११०० प्रतियां

सन् १९७३

मोल—रु ५.७५

मुद्रक—

गणराज्य प्रेस

बीकानेर

## समर्पण

जिणां रो आशीर्वाद ही इण पोथी में  
फलित हुयो है, उणां भाईजी  
श्री युगलनारायणजी (एडवोकेट साहब)  
ने  
'अटारवां' नांव रो आ पोथी  
सादर समर्पित है

—ब्रजनारायण

## प्रकाशकीय

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (भकादमी), बीकानेर, आपरै पैलें साल रै प्रकाशनां सारु भाठ पोथ्यां स्वीकारी, जिणां मांय सून डॉ. ब्रजनारायण पुरोहित री कृति 'भटारवां' अेक है ।

डॉ. पुरोहित राजस्थानी रा उदीयमान साहित्यकार है अर इणां री कृति रै प्रकाशन सून तथा दूजै नवोदित साहित्यकारां री पोथ्यां छापण सून आ बात स्पष्ट हुवै 'कै राजस्थानी 'संगम (भकादमी)' खासी 'पैली सून धरपीज्योड़ा लिखारां री रचनावां ई छापै कोनी, श्रेष्ठ रचना-लिखार नया साहित्यकार भी इण 'मंच सून प्रकाशन पावै ।

भरोसो है, भटारवां में संकलित; डॉ. पुरोहित री अै रचनावा सहृदय पाठका रै मन भासी । ,

—श्रीलाल न० जोशी

मानद मंत्री

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (भकादमी), बीकानेर

## दृष्टि : आभार

विधाता की इण सृष्टि में मिनख जूण ई इसी है जिण नै मुक्त हाथ, मुक्त बाणी अर विकसित मस्तिष्क प्राप्त है। मिनखपण में ई इण वास्तु मानव नै आप रै व्यक्तित्व रै विकास रो अवसर मिले। इण असार संसार में असंख्य भांत रा लोग रैवै; भाछे सून आछा अर हळकै सून हळका। जीवन में भोकळा लोगा सून भेटा हवै पण केई इसा मिले जिका में कई खूबी हवै, जिकी चिर स्मरणीय हवै। एक दातारी रो रूप तो बीजो कंजूसी रो पूतळो, एक विद्वान तो दूजो ठोठ, एक हुसियार तो दूसरो भोदो, एक डोढ़ सैणो तो बीजो डफोळ, एक ठगणियो तो दूजो ठगावणियो, इण तरै अणनिष्ठ रूप देखीजै। केई आप रै गुणा सून ओटखीजै तो केई कूटेपणी रै कारण। पण जन-मानस पर दोना तरै रा रूप अमिट रैवै।

नामी अर विशेष व्यक्ति रै खातर 'अटारवा' शब्द प्रयुक्त हवै। इण पोथी में जिका चैरां सामे आवै, वै भी केई न केई कारण सून विशेष रह्या है। इण वास्तु पोथी रो नाव 'अटारवा' राखियो है।

ओ मन-सागर असंख्य विचार बीबिकावां सून तरंगित रैवै। इण तरंग्यां साथै कदै-कदैई मुक्तावां सून युक्त सीपट्या भी अन्तरतळ सून नीसर' र किनारै आय लागै। पूठी अनन्त में विलीन हुवण सून पैलां जे भवकै में उणां नै तत्काल ग्रहण करली जावै तो रैवै ठीक अर नई तो फेर .....। जद उण सीपट्यां सून मुक्तावां नै नीसार'र चोखे डोरै में, सफाई सून पिरोय'र लडो, भूमवां या माळ रो रूप दियो जावै जद ही उणां की चमक अर दमक में निखार लखीजै। पण उण मुक्तावां रो सही मूल्यांकन, पारखी भंवरी रै हाथां रै स्पर्म बिना कियां सम्भव हवै ?

इण पोथी रै प्रकाशन में गुरुजनां की आसीत ही म्हारो सम्बन्ध रह्यो है। इण में जो की है, वो म्हारै पूज्य पिताथी, सर्व श्री पं० विद्याधरजी शास्त्री, नरेंद्रमदामजी स्वामी, आसारामजी पुरोहित 'महाराज', रमणमाजी,

पं० लक्ष्मीनारायणजी, हरनारायणजी, मुगलनारायणजी, श्री कन्हैयालालजी गोस्वामी, कन्हैयालालजी शर्मा, मुरलीधरजी 'राजस्थानी', अग्ररचदजी नाहटा, डॉ० माधोदासजी व्यास जिंसा समादुत गुरुजना रो प्रसाद ई है ।

श्री मुरलीधर जी 'राजस्थानी', अर श्री धीनालजी जोशी रो हूं हृदय सूं आभारी हूं, जिकां पोथी नै तत्परता सूं प्रकाशित करवायी । मास्टरजी (श्री दीनानाथजी खत्री) रै खातर धन्यवाद शब्द तो मात्र औपचारिक है, बां रै सहयोग खातर, हू घणो आभारी हूं ।

इण पोथी रो कई रचनावा हरावळ, लोक सम्पर्क, राजस्थान भारती मे प्रकाशित हुयोड़ी है । इण खातर हू सर्वथी सत्यप्रकाशजी जोशी, जगदीशजी माथुर 'कमल', प्रकाशजी परिमल, रमेशजी जैन अर भवरजी भादाणी रो हृदय सूं आभारी हूं । श्री मूलचन्दजी 'प्राणेश' अर श्री शिवराजजी छगाणी नै धन्यवाद देणो चाऊं, जिका व्यस्त हुवता थका भी पोथी रो छपाई देखण रो कष्ट करियो ।

भारती-भवन, बीकानेर

—ब्रजनारायण पुरोहित

आज्ञातीज वि० सं० २०३०

## सूचनिका

१. गुसाईजी	१
२. काकूजी	५
३. दूलजी	११
४. पहलवान साहब	१७
५. मारजा	२१
६. सुगनजी	२७
७. हाकम साहब	२६
८. सेठाणी	३३
९. जीमाकियो	३७
१०. मुनीमजी	४१
११. कुडछी कलक	४३
१२. बाबू साहब	४७
१३. घाईती	५१
१४. पिडतजी	५५
१५. वकील साहब	५६
१६. सनजी	६३



१७.	मास्टरजी	६५
१८.	योगानन्दजी	६७
१९.	सेठ	७३
२०.	न्यायमूर्ति	७७
२१.	ठाकर साहब	८३

## गुसाईं जी

गोस्वामी त्रिपुरमोहन जी नै लोग गुसाईं जी रै नांव भूँ भोळखता ह्य । उणा रो सागी नांव बोत कम लोग नै ठा हो । कसूँ बल पेचो, डुपटो गळ मे लपेटियोड़ो, कोट नीचो—नीचो, घर घोती ई नीची-नीची—आ ही बां री पोसाक । जूती देसी, कसीदो काढ़ियोड़ी पैरिया करता बै । बोलण मे भीठा जाणै मिसरी धुलियोड़ी ही वा री जवान मे । बै कैया करता कै थोळणघाळ नै सुणीजणो चाईजै कै हूं काईं बोलूँ । ई सरस्वती रै रैवण री जाग्यां (जवान) ऊपर दघ घर मुरा सबदां नै नई आवण देवणा । कडवो बोलण सूँ ई मरस्वती माता नराज हवै ।

गुसाईं जी आशु—कवि हा । देवी रा भगत हा घर राज मे मनीजता । खान-पान बिल्कुल सुद्ध । घर री बणियोड़ी रसोई रै भलावा भूडो कठई नई आठणों । पाणी ई डोलजळ पीवणो । बै ठंडाई पीवता तो ई घरै । एक छटाक बिदाम, आधी छटाक पिस्ता, पाच मासा बिजिया, काळी मिरचा रा च्यार दाणा घर दो छोटी इलायची नै घोट र सुगदी बणावतो, वा रो बेटो, भोर मे । फेर छाण'र लेवता, नित रै सेवा-पूजा रै काम सूँ निमट'र । बै कैवता—“भोरिया सो किरोडिया । भोरिया छाणै किरोडिया पावै ।”

बै कल्पना री उडान भरता-भरता केई लोका मे विचरता । कदै-कदै हंसाय-हंसाय'र पेट दुखावता । एक दर्फ बै डागळ बैठा विचार-मगन हा । पिडताणी आय'र भक्तभोरिया—“खईं करो हो ?”

“घारै खडी रो समान जुटाऊं हूं ।”

“खईं बात करो ?”

“ठीक कैयूं । हूं सोचूं कै हणै बादल बरसमी, पाणी री जाग्यां दूध । फेर गडा री जाग्यां बिदाम पिस्ता, नेजा, काजू घर इलायच्यां बरसण लागसी घर फेर चालसी भांधी ।”

“जद किरकत पडमी ।”

“गुड-मोबर कर दियो सगळो । अरे, आधी में रेत रो एक कण ई नईं बरसै, बरससी खाड-ई-खाड अर फेर बणसी खडी चकान-धक ।”

पिडताणी हमण लागी । इनै मे ई बा रो बेटो रोवतो आयो अर कैयो—“काक्का मोकूं फेल कर दियो दूजी किलास में ।”

“खईं हुयग्यो । चाल म्हारै मागै ।”

बै कपडा पैंर'र स्कूल गया अर मास्टरजी नै देख'र कैयो—

“आळा-टाळा मत करो तुम आला उस्ताद  
वाळक पर किरपा करो, जी बाला परसाद ।”

मास्टरजी रो नाव बाला परमादजी हो । बा राजी हुय'र कैयो कै हूं तो काई-कर सकूं नईं । आवो, हैडमास्टरजी कनै चाला । बै, बा कनै गया । मास्टरजी कैयो—

“अै पिण्डतजी पधारिया है । छोरो थोडा सी नबरा सूं फैल है । आप .....”

इत्तै मे ई गुमाई जी बोलिया ।—

“पास करदो मुकरजी, हूं मनाऊ मुकर जी ।”

हैड मास्टरजी मुकरजी हा । राजी हुयग्या'अर बां नै पास रो कैय दियो । गुमाईजी धिनबाद दियो घर छोरे नै कैयो—“अै कबिताबा कद ताईं पास करासी, पढं नयूं नईं ?”—आ कैय'र धरै गया ।

गुमाई जी नै एक दफे राजाजी पूछियो—“मा'राज, आपनै गाव बगस राखियो है, फेर ई रुपिया भेळा नईं हुया आप रै । काईं कारण है ?”

“राजन्, काल बतासूं ।”

दूमरै दिन बां राजाजी रै सामनै आपरै दुपट्टे मे बंधियोड़ो-खुर-पनियो अर कड़ाळियो निकाळियो अर कैयो—‘धो गाय जावै सगळा

रुपिया तो : भाग ऊपर बाग लगावणो पड़े, राजन !”

राजाजी देखता रैयग्या ।

एक बार बातो-बात चाली । राजाजी कैयो, —“मा'राज ! आपरा पूरवज तो इसा हा कै समुन्दर रो सगळो पाणी पीग्या, पण आज कोई माटो भरियोड़ो पाणी पीवणआळो ई नईं मिळें ।”

“मिळें क्यों नईं, हूं पी जाऊं ।”

“आप पी सको ?”

“हां-हां ।”

“तो काल आप नै पीवणो पडसी । आपरें वास्तें सुद्ध डोलजळ माटें में छाणाय'र त्यार राखसी ।”

“तो वा भला”—आ कैय'र वैं धरें गया ।

दूसरें दिन गढ में भीड़ लागी । घणां जणा तमासो देखण नै भेळा हुया । हाकम-मुसद्दी, सेठ-सऊकार, ताजीमी सिरदार धर उमराव जाआय'र आपरी जाग्या बैठग्या । गुमाई'जी पूगिया । वां सुद्ध माटें रै पाणी नै देखियो धर करवो भरियो । भर'र पीवण नै त्यार हुया । पण वां, आपरें दुपट्टें माय सून गड्ढा-गुळगुचिया खोल'र राजाजी नै देवता थका धरज करी—  
“जम्मा पृथ्वीनाथ, इया नै आप रै हाथ सून करवें में धारा'र तिराय देवो ।”

“बू'टी घणी पियोड़ो है काईं ? कदेई गड्ढा-गुळगुचिया ई पाणी में तिरै ?”—हंस'र, राजाजी कैयो । सै हंमण लाग़ा ।

“बू'टी नईं अन्नदाता ! आप रा माईत तो इसा हा कै पत्थर री सिलावो नै समुन्दर रै पाणी ऊपर तिरायदी । इयै वास्तै भै गुळगुचिया तो आप ई तिराय देसो, इसी म्हुनै आसा है ।”

आ बात सुण'र राजाजी सूना हुयग्या । सै जणा चुपचाप । आखर राजजी वा कनै माफी मागी धर सगळां नै हुकम दियो कै आ बात बारै नईं जावणी चाईजै । □ □

गुमाईजी रै काकें रो बेटो गाय बेचणी आवतो हो । वै रो वाडो वां रै धर रै चिपतो हो । गाय उठै ई बन्धती । यो एक दिन एक आहक नै लायी । स्थाई रो एक रुपियो नेय 'र बात पक्की करी । पण भावी

जोग इमो, के गुसाईं जी ऊपर मूं भाखो घालियो । वो ग्राहक, वां रो जाण-कार हो । इयें वास्ते ऊपर मूं ई कैयो — “थूं लेजावेगो खाई ? ...” लेजा-लेजा अठै मूं जल्दी । याकूं तो काल ई मिरगी आयगी हो ।”

आ सुण'र वो ग्राहक स्याई रो एक रुपियो छोड़'र बार निसरग्यो अर वा रै काकै रो बेटो रीसां बळतो आप रै घरें गयो ।

गुसाईं जी नै आप री मौत रो पेला ई पत्तो पड़ग्यो । इयें वास्ते ई वै आखरी दिनां मे घर रै मिंदर सूं बार बोत-कम निसरता ।

सावण रो मईनो हो । वै साल राजाजी अनुष्ठान बैठावण नै स्यार हुया अर वां नै अधिष्ठता बणण री कई । वा नक्कारो करियो अर कैयो — “पृथ्वीनाथ ! अनुष्ठान मे दूसरै पिण्डत नै अधिस्थाता बणावो । कार्यक्रम रै बिचाळै जे अधिस्थाता री मिरतू हुवें तो जजमान रै काम मे बाधा पडै ।” आ बात कैवतै-कैवतै वा रै आसूं टपकण लाग्या ।

राजाजी वा नै कैयो — “मा'राज इया काई ?”

“अन्नदाता ! आप म्हारी तो निभाय दी, पण एक घरज है कै ओ छोरो चावै लायक है या नई, आप इयें नै निभाया ।”

“आप काई बैम मे पडाया ? आप केई बात रो फिकर मतो करो ।”

आ सुण'र गुसाईं जी घरे गया अर तीसरै दिन वै चिर-निद्रा मे सोयग्या । जाणकार लोगा री जबान ऊपर वा री घणी चरचा हुई ।



## काकूजी

डोवटी रो कुरतो, कोरपाण धोती, देसी पगरमी, माथे ऊपर पागड़ी धारण करणआळा काकूजी गोरे रंग रा धणी हा। ठीकसर कद भर कसरत सून गठिघोडो शरीर बां रै लावे जीवन रो कारण हो। बात-बात मे बात कंवता पण कमाई करण नै करम कदेई साथ नई दियो। केई जागा नोकर रैया, तगादे रो काम कियो, जमाखरच घोमो जाणता। पण पगा रा बखतावर गिणीजता। इयै वास्तै सेठ-सऊयारां रो मन नई करतो वा नै आपरै भठै राखण रो। सै बां नै नोकर राखता डरता।

वै सैर मे बड़े-बड़े ठिकाणां पर पोंचता, इयै वास्तै लोग बां सून डरता रैवता कै वै वो रो निन्दा कठेई नई कर देवै। ओ ईजं कारण हो कै काकूजी नै केई दान खाना सून सिरणी मिळ जावती, मोकै-टोकै।

काकूजी ओघार लेय 'र पूठी देवणी नई सीलिया। कंवत ई है—

इयैमो'लै री घा ई रसम  
लेय'र देवण री सब रै कसम।  
एक ई जे लेय'र दियो  
सगळै मो'लै नै बदनाम कियो ॥

इयै वास्तै वै जलम पतरी देखणआळं नै कंवता—“कमाई री जोग नई हुवै तो कोई चित्या री बात कोनी, पण ओघारेस किसो 'क है?’ ओघारेस री मतलब ओघार सून हो। वै कंवना कै-ओघार मिलवो-करै ती फेर कांई चाइजै। ओघार रो किसो मैणी है? बडा-बड़ा बक

ई तो, ओघार सूं ई चाले अर फेर मरदा रा देवाळा तो मसाणा मे ई चुके ।

वा नै जे कोई तगादो कर देवतो जणै वै री शान किरकिरी कर देवता । एक दफे एक तगादगीर उवा नै तगादो कर दियो । वस, फेर काई ढील ही उठे ? भट कैंयो—“थारै सेठ रै रुपिया इसा खुडपग्या है कै—जद सूं एक सो सित्तर रुपिया लिया दोय सैं री चीट्टी लिख 'र, उवै दिन सूं एके डब्बन री कमाई नई हुई । तूं सावचेत रैये ।” आ सुण 'र लोग भेळा हुयग्या पण वो तगादगीर उठे सूं आय चुबधो हो । कळकतै रो एक आसामी काकूजी मे रुपिया मागतो हो । वै धीरज सूं रुपिया मागिया । काकूजी वै नै दो दिन बाद रेलघाट आवण री कैई । वै दिन वै उठे सूं रवाना हुवण आळा हा ठीक दिन वो आसामी रेलघाट पूगो । काकूजी डब्बे में बैठा हा । वै नै देख 'र कैंयो कै असल अर व्याज फळाय 'र बतावो । उवै भट बताय दिया । पण वै इया किस्सा रुपिया देवता ? चीट्टी देखण नै ली अर गाड़ी रवाने हुवत ई चीट्टी नै जरड-जरड फाड दी । वो देखतो ई रैंयो । काकूजी चलतो गाड़ी मे ई वै नै कैंयो कै नित-नित रो सुख-दुख मिटग्यो । आ चीट्टी फोड़ा घालती । देखता जणै जी हड़ड़ा लेवतो । अबै हुया सूं राग्वी कोनी अर नई हुया सूं चामड़ी काट 'र दिरीजै कोनी ।

काकूजी रोज व्याभामसाळा जावता । पण तेल-सावण घर सूं कदेई न ई ले जावता । आतो कई नई, पण वै तो संगोटा ई दूसरा रा अजमावता । वा री इय आदत सूं तग भाय 'र एक बार उस्तादजी कैंयो—“रोज छाती छोलो कदेई सेर भर तेल सावण री मन मे भावै ?”

“मन मे तो कदेई नई भावै पण आप हुकम करो तो सेर भर काई एक सौ एक कर दूं ।”

“काई एक सौ एक कर देवो ? बात्था मे पायसी । एक सौ एक तो घणी बात है, पैला एकसेर तेल तो लाय 'र बतावो ।”

“एक सेर काई ? एक पीयो नावूँसा जिको पूरा एक सौ एक हुय जासी ।”

“क्या बात करो गैलाई री ।”

“वाह माय वाह । इयें में गैलाई री काई बा हुई ? सो मांगण आळा तो हे ई, एक तेल रो पीपो भळी ले आइस, जिकें सूं पूरा एक सो एक लेवाळ हुय ज्यामी ।”

“आ बात मुण 'र उस्तादजी वां रो भूंडो ताकण लाग्या ।

□ □

काकूजी केई नै ई अंटी माय सूं एक डब्बल ई देवणो चावता नई । वैं सो जवान री लपालपी भूं ई काम निकाळता । घणां बरसां री बात है कौ वां रै पोतो हुयो । वैं हूमां मे रैवता हा, इयें वास्तै हूमण्यो भट पौंची, थोळी री भणकार सुणता ई ज । वां काकूजी नै बघाई दी अर आपरी राग अलापण लाग्या । डोलक ठमाठम खड्कण लागी । लोग भावण-जावण लाग्या । घणी देर गाय'र वैं कैवण लाग्या — “लिम्मा अन्न-दाता ? दिन-दिन धारा भाग, आज सोनें रो सूरज ऊगियो । दिन दिन हा, तो अबै म्हारी ई सुणाई करो अन्नदाता ! म्हें पाडोसी ई हूं । बडी खुसी हुई ।

“बगसीस कांयरी ?” काकूजी इचरज सूं पूछियो,

“आपरै पड़पोता री जागा पोतो हुयो है, म्हानै पड़ी खुसी हुई है ।”

“तो इयें में कईं बात हुयगी बगसीस री, ये म्हारी पाडोसण्यां अर हित चावण आळभां । थानें खुसी नईं हुसी जद किणनै हुसी ? धामें अर म्हां में फरक काई है अर सरो भरो किसी हुवै कोयनी ? धारै पोतो हुवै जद म्हे आय 'र धारै गाय-बजाम जासो ।”

आ बात मुण 'र हूमण्यां आपरै रस्तै लागियां ।

फेर बारी आई पिढण्णजी री । वां वेळा ली, टेवो बणायी अर लिताड़ मे “सळ घाळ 'र कैयो — “पायो लोवै रो है ।” ; . . .

“तो चोखो कांय रो हुवै ?”

“चोखो तो चादी रो हुवै ।”

“तो अबै इयें टेवै मे चांदी रो पायो ई लिखिया । हूं धारो हूं ये म्हांरा हो । पोतो आपा रो है, कलम आपां री है, मजासणो अर रघाई



आपारी है, कागद ई आपा रो है फेर लोहै रै पाये री काई मजाल कै अवे लिखीजसी अवे तो चादी रो पायो ई लिखीजसी ।” पिडतजी तो देखण लाग्या ।

□ □

काकूजी खरी कैवण मे ई नई चूकता, एक दफै एक सेठ हरद्वार मे मरियो । लोग कैवण लाग् के देखो सेठ कित्तो भागी हो कै हर री पेडघा ऊपर शरीर छोडियो । आ बात सुणताई काकूजी पूछियो—“अरे ! उठै क्या गिडक को मरैनी ?” कैवण आळै मिनख रो मूँडो उतरग्यो ।

वै जीमण रा भी ड्रेमी हा । एक दफै वै एक बीद रै साथै वै रै सासरै (जवाई-जीमण रै दिन) गया । रस्तै मे एक जण टोकियो कै जवाई-जीमण मे तो आप रो जावणो बेवाजबी है । जद वा केकैयो तूँ तो साफ मूरख है अरे, बीद तो हमेशा ई बडा हुवै । इयै वास्तै ई तो वै नै बीद राजा कैवै । धारो हियो हाथ हुवैला ? अर वनै आ ठा हुवैला कै बीद जे बडो नई गिणीजै जणै बारै बरसा रै बीद सागै अस्सी-अस्सी बरसा रा डोकरा जान-जीवण नै क्या जावै ?” अवे कोई वां नै काई कैवतो ?

काकूजी सून व्यायामसाळा मे रौनक रैवती । वै कसरत कम अर वास्या घणी करता । बास्या मे ई रस आवतो । एक दफै अलाडै रै बार मजमो लाग्योडो हो । जमाने री नास्या चालती ही । सगळां कैधो कै जमानो टेडो आयग्यो ।

“आ सुण ’र काकूजी बोल्या—“हा-हा, जमानो बडो टेडो आयग्यो । यो जमानो घणो ठीक हो जिकै में भीसमजी बैठा, मुधिठर, अरजुन, भीम, करण जिसा दिग्गज बैठा अर द्रौपदी री घोती दुष्ट दुसासन खीच रैयो हो वा चिरळाघ रै ई ही पण से जाणै मिट्टी रा माघो हा । पण आज जे कोई इयां दूसरी सुगाई री हालत करे जणै जावणो पड़ै जेल भट्ट कै दी जमानो टेडो .... ।

आ सुण ’सै जणा चुप हुयग्या अर पिछै हसण लाग्या ।

□ □

काकूजी लोगां नै भोदू बणाय ’र ई आपरो काम काडणो जाणता हा । एक बार वै बाजार जावता हा । हाथ मे गूणियो खाली । रस्तै मे

एक हवेसी हो । बँ में बांरा जाणकार वकील साहब रैवता । बँ नूँघा ई हा घर काकूजी री पूरी बिगतबार सूँ भणजाण हा । बँ गोसँ में ऊभा हा । काकूजी नँ देरा'र पगेतागणा किया । काकूजी घासीस दीयी घर ऊपर गया । वकील साहब कमरें में बैठाया । काकूजी ऊपर—हेठँ देराण सागा । वकील साहब पूछियो—“कई देगण लाग्या ?”

“हू इयँ पोय्यां नँ देखूँ हू । मैं कोई चीजरी है ?”

“मे फँसला है हाई कोटाँ रा । केई प्रियो-मोसल रा फँसला है ।”

“प्रियो कौसल रा ?” इचरज सूँ काकूजी पूछियो ।

“हां—हां । म्हानँ में पठणा पडै ।”

“जणें तो आप बिलायत तक रो कानून जानो । अब ईज तो आप रो नाब हुय रैयो है । भवँ बतावो कैरी मा सूँठ खाई है जिको आप रो मुकाबलो करै ।” आ कैय'र बँ टुरण लाग्या । पण दूसरँ ई सण भिम्भक 'र ऊभग्या । पागड़ी रँ पेच भी देखी तो खुसो । घूँडो थोळो फक्क हुयग्यो । जवान सूँ कैयो—तिसकग्यो ?”

“काईं हुयो ?” वकील साहब पूछियो ।

“हुवतो काई । बडी पर चढ़ाय, है आज बापजी रो सराध है । धी लेवण ने चोटै जावतो, रसोइयो परै उडीकतो हुबँला । दस रो लोट हो, तिसकग्यो कठईं ।

“कठै पडियो ?”

“आ काईं ठा । पण अभी धरै कजै जाईस खुडिया खुतरतो । शीर मला मागता सरम तो भावँ पण काईं भुपाव ? हुय सकै तो दस रो एक लोट दे दो, सिस्व्या ने पूगतो कर देईस । गुंजायस हुनै तो दिया ।”

वकील साहब विचारों जेब सूँ एक लोट दस रो बाँ रँ हवालै करियो । काकूजी बाँ नँ घासीमा देवता पगोबिया सूँ उतरिया पण वकील सा 'व रो लोट आखर में तिखीजियो बट्टै-खात्तै ।

दूसरँ बिस्व युद्ध रँ समै एक जणें बातों-बात में कैयो कै जापान ऊपर बम्ब रा गोळा पडिया, आ बडी बात हुई । भगवान मुणत्ती । जे कठकत्तै में राखस इसो कवाढो कर लेवता जणें काईं बचतो ?”

काकूजी भट धोलिया - “अरे ! शिखर आळै नै फिर है ।  
 पण जे कदास काई किसी ई हुय ज्यावती तो बचतो कई कीकर पूछो ?  
 जे हिन्दू हुवतो तो “वचतो गरुड़ पुराण” अर जे मुसलमान हुवतो जण  
 पढ़ीजतो फातियो ।” इयै उयळै नै सुण 'र सगळा जणां हंसण लाग्या ।

लारसै दिना मे काकूजी विल्कुल बदळ्या । वा हरि भजन मे  
 चित्त लगाय दियो । मिलै जिकै नै ई कैवता कै टिगस तो कटायोडी है,  
 गाही आई कोनी । एक बात थीर है कै बै तो (यानी जमरा दूत तो)  
 ऊंतावळ मे आवै अर 'समन' ई वाणिकै में लिखियोडी लावै । इयै वास्तै  
 गलती कर देवै । 'काकूजी', रो जागा इयै वास्तै ईज तो कदेई काकाजी  
 नै ले जावै अर कदेई काकीजी नै ।

आपा नै आखर एक दिन तो सगळां नै ई मरणो है । ऊभा है जिका  
 नै आडो हुवणो है अर इयै वास्तै जे काकूजी परलोक पधारिया तो इयै  
 मे इचरज किण बात रो ?



## दूलजी

सेर रै मांगलै पासै हहमानजी रै मिदर खनै एक बाबोजी रैवता हा । गोरो रग, डीगो कद, भुरचां पडियोडो सरीर पण कान्ति सूं भरपूर खै'री हो, दूलजी रो । घर सूं निसरता जद छोरा 'पगैलागू' बाबाजी, पगैलागू' बाबाजी' कैवण लागता । वै भी रीस अतावता थकां उथळो देवता—“कूडा कठैराई, निसरमा टोगड़ जलमग्या । पगैलागू-पगैलागू' करै । आ नई' भूभै कै साबैला पगैलागै । भै पड़िया पग, लागै भी कोई पगै भाय'र ।” इया घर सूं निसरतै ई चोळकी सुरू हुवतो ।

दूलजी मसखरा भी हा । एक दफै एक मंगल री पानो पडग्यो, उणा सूं । वै निङ्गिहायर कंयो—बाबू सा० ! मोत गरीब हूं । दो दिन सूं भूखो हूं । की-न-की .....।

वै री बात पूरी सुणियां विना ई वै भागै बघ'र कैवण सागा—“लै, बटका भर लै म्हारे !”

“हूं .....भाई ..... बा . ... प..... !”

“हां-हां सुणली घारी । घारै सारै हूं भगवान सूं बैर मोल लेऊं काई ?”

“इयै मे भगवान सूं बैर मोल लेवण री काई बात है ?”

“यनै काई ठा बन्ना ! अजै सेर में ठग-ठग'र खायो है । भगवान यनै घारै करमां रो फळ देवै अर हूं बीच में यनै जे रोटी-बाटी देऊं तो भगवान सूं बैर मोल लेवणो हुवै का नई ?”

बापई मंगते नी भूँडो उतार'र उठे भूँ जावणो पड़ियो ।

एक बार चाँ रे सगै परसंगी मजाक में कैयो — “घारी भाजी रो नातो म्हारे बापजी भूँ कर देवो ।”

“घणी पोसी बात कैयो आप ! नेकी घर पूछ-पूछ'र पण ?”

“पण काई ?”

“ ‘पण’ आ कै यानै बापजी चाहजै है या नई ? उफताया ह्यो तो आ कै देवो !”

“कयो ?”

“कयोके म्हारी भाँ तो भिनख खायणी है । म्हारै बाप नै ई सरग भेज दियो ।”

ओ उथलो सुण'र वो घादमी तो जाणै हिमाळो ह्वायो । दूल्जी धै समै भर जवानी में हा ।

दूल्जी घर में घुतरफ़ी चालता । बेटा नै कैवता — “इयै बीदण्याँ रो भरगत भरिया करो । बाँडघाँ है भै, नई” तो रोटी सुख री मिलणी मुसकल हुय जावैली ।”

घर बेटा नई हुवंता जद बीदण्या नै कैवता — “हूँ तो इया ई कैया करूं हूँ । यै रीस मत करिया ना । श्री छोरा म्हुनै टधूसन कर'र पूरा पइसा थोड़ा ही बोनावै है । बै भाड़ लिया करो, नई” तो अउताई में गमासी ।”

दूराजी खुसदिल हा । एक दफै एक घरजी वा री गळी मे दुकान खोलली, वै उण खनै कपडै रो थान लेय'र गया घर कैयो — “तू म्हारै पाड़ोस मे आयो है, इयै वाहने म्हारो फरज ह्य जयावै, दो पइसा धनै ई पैदा करावण रो । म्हारै छोरा रै ‘हा-मैटयो’ सीवणी है । बोल, काई लेईस ?”

“ब्यार-ब्यार आना ।”

“तो ठीक भला । ले ओ कपडो । छोरा नै बुलाऊ ।” आ कैय'र वा हेलो मारियो —

“भाबो रे भैरिया, गोरिया, काळिया, चूनिया भूनिया, फूनिया, भालूडा ... । हां-हां अठे भाबो इयै कारीगर री दुकान में ।”

दूलजी री भवाज सुणतां ई सात जणा दरजी री दुकान मे बडिया । बां नै देखे’र दरजी कैयो कै—“छोरां नै बुलावो ।”

“अँ छोरा खड़ा है नी । नैप ले ।”

“अँ छोरा है ?”—इचरज सूं दरजी पूछियो ।

“छोरा नईं तो म्हारा बाप है ? म्हारा बेटा है, अँ सातूँ । नैप लेवणो पड़सी । जवान सूं तो बेटा-बेटी परणीजै । .....लँ जल्दी नैप ले । काल तो इया नै खेलणो है म्हारी टीम मे ।”

दरजी नै बां छोरां रै आखर मे सीवणी पड़ी ‘हा-पैट्यां, ग्यार-भ्यार भानां मे पण पछै वँ नै वा गल्ली ई छोडणी पड़ी ।

□ □

दूलजी, आप भाळां नै चावता । इयै कारण एक बार बा में घणी लोटी बीती । बांरी जवानी में एक इसी ई घटना घटी । वँ आपरी काकी री सीड़ी खातर सिणिया-बांस लेवण गया । सिणिया-बांस लेय’र वँ सुपारां री गुवाड़ मे पोख्या घर एक घर रै मोड़ें भागै मेल’र भावाज लगाई—“मिनियो है कई ?”

“हां, भाऊं ।” भा कैय’र मिनियो अठ भर सूं भारै निसरियो । पण भावतै ई कैयो—“ओ कोई करियो । म्हारै घर भागै अँ किसा सुगन करो हो ? इयो नै हटावो परा अठे सूं किरपा कर’र ।”

“म्हें जाणियो कै तूं घर रो सुमार है, गाता करण री मजूरी रा दो पईसा बनै ई पैदा कराऊं । दूसरै नै पैदा करावण मे कोई सार ?”

“पण इयै रा गाता करण भाळै रो घर तो सिणिया-बांस री दुकान खनै ई है । आप पूठा उठे पधारो ।”

भा सुण’र दूलजी पूठा टुरिया। रस्तें में लोगो पूछियो—“दूलजी पूठा कियां !”

“वा तो उठगी । जीवती नै बाळां कोई ?”

..... इयाँ कैयूर आपरी गलती न छिपावता वींगता करायूर दूसरे मारग सून आपरै थानै-मुकामै पोंचिया ।

दूलजी रै एक बेटे कैयो—भा ! अजकाल चोरधां बहुत हुवै, आपाने ई जाग राखणी चाईजे ।

“अरे ओ टोगड़ ! चोर आसी काईं लेवण नै । वो आयूर रसोई मांय सून भूंगळी अर खीपियो भलाई ले जाया । पण और समान लेवण रो ताव वी री नई पड सकै । जिकै कमरे मे बडसी वी में ई भूत ज्यों मूता लाधसो थे, अर थारा बीरा ।” ओ उयळो दूलजी दियो ।

दूलजी दुनियां देखी ही । वी उक्त रा पूतळा हा । जीमण जावता जणै आपरै पोतै नै ऐंढो ले जावता । वो बडो दीसतो, इयै यास्तै वी उण नै ‘हापैन्ट’ पैरायर ई ले जावता । वी कैवता कै—सूयण सून बड्डी दीसै ।

दूलजी जीमण में तीखा हा । वी कैवता कै पैना मीठो, मीठै-सून खावणो पछै भुजिया सून वाद में पूडी सून अर आप्पर मे फेर मीठो, मीठै सून चलावणो । वी पूडी रो पुरसारो नई लेवता । जद कोई पूडी रो पूछतो जद कैवता कै म्है किसा बीमार हा ? पूडी तो (पुड़िया तो) रोगी लेवै । जद थारो पोतो पूडी मांग लेवतो तेद वी बकैता अर कैवता कै घर मे आटो घापूर खावै कोनी काई ? निठ तो पिण्डो छूटै है आटै सून अर तू फेर आटै सून मायो लगावै भटै ई । जे कदेई वां रो पोतो दईबडा मांग लेवतो तो वी कैवता कै काईं चीलझा खावै है । ओ तेल नारा चीटा तो घरै ई धणवाम देसू । छाछ पणी ई मिलै मांगियां सून । घाप र घरे खावलियै ?

दूलजी पक्का हा । वी कैवता कै म्है घणी-ई ताती-ठण्डी देखी है । जे बच्चो हुवतो तो बीमासा कीकर मैवतो । पड को जावतो नी ?

दूलजी कई अटकल्यां जाणता । एक दफे चां रै बेटे नै उठावण नै वी रो एक साथी—मास्टर आयो । वी हेला करणा सुरू करिया । पण रात पणी हुयगो ही, इयै यास्तै पूडो उयळो गुण देवतो । दूलजी बार

मिंदर भाळो चौकी ऊपर सूता हा । भट उठिया अर पूछियो—“कुण हुसी ?”

“ओ तो हूं हूं बाबा ।”

“अच्छा मास्टर जी ।”

“हां, पगैलागूं । फूनियै सूं बात करनी है । दिनूंगै स्कूल में इन्स-पेक्टर साहब आसी ।”

“तो इसा उठाय लियो फूनियै नै ? ठैरो, हूं हर्ण अगाऊं ।” भा कैय'र वा हेलो मारियो—

“अे फूनियै री बऊ, यारी मां नै बिच्छू खायायो, -धनै तेड़ी भायो है ।”

भा बात सुणता ई फूनियो अर वै री बऊ धम्म-धम्म करता हैठै उतरिया । पण दूजगी भट कैयो कै धानै उठावण नै ओ हेली करियो । फूनियै रै अै साथी—मास्टरजी भाया है । मास्टरजी देखत ई रैग्या ।

जिन्दगी रै सारसी दिनां मे वै कैवण साग्या कै “हे हड़मान बाबा ! अबै म्हारी सुण ली । इयै भाष मे आवण थाळै सावै सूं पैलां म्हनै उठाय लै ।”

दो-बचार बार तो बेटा सुणाई करी कोनी, पण जद वै उठता-बैठता भा-ई बात कैवता जणै वा रै बडोडं बेटे पूछियो कै धानै काई'तफलीफ है भा । इसा किया करो अजकाल । कोई बात हुवै तो फरमावो ।

“.. तो म्हनै अबै भीत्यां में चिणवासो आ देवली वणवासो म्हारी ? मरणो तो एक दिन है ई घर म्है तो खूब खाम-भीय लियो । अबै ग्याल हुय ज्याऊं ।”

“भा बात तो ठीक है कै एक दिन जावणो तो है, पण आपा कयो फिकर करा, हाकै फिकर करमी जमराजा ।”

“पण जमराजा नै याद दिरावां । कठै ई म्हांरी चीठी ऊंररा तो नई धीम तेग्या हुवै ।”



“पण भो सावो तो मुख सून देखलो ।”

“सावा तो घणा ई देखिया । अब थारें मुख करणो चाऊं, सावें मे । कारण कै सोग रै व्यांव मे थारें खरच कम लागसी भर एक बात और हे कै म्हारें पितरामेळै-भाइपै मे ई थारें दो तीन सै रो स्वार हुय ज्यासी ।”

“काई कैवो हो ?”

“ठीक तो कैऊं हूं । याने ठा हुवला कै आपारें घर मे घंवरघा भंडसी छव । भर जे हूं सावें रै बाद मरसूं जद छव जंवाई बघसी, जीमण भाल्ला । भर एक-एक जणो दस-दस, बारें-बारें सून कम साथै नई लावै । इयै वास्तै थारें सौ पूण सै भादम्यां रो खरची बचसी । रीत-कांसा देवण मे ई बचत हुसी ।” आ बात सुण'र सै खिल खितावण लाग्या । दा रा बेटा बां रै खानी टुग-टुग देखण लाग्या ।

## पहलवान साहब

बल बिना संसार में होवै नईं आदर कईं  
जर जमी जोरु कदै हरगज बली खोवै नईं ।  
हार खाय दुस्मण सूं हरगीज बली रोवै नईं  
कुस्ती भर कसरत बिना हरगीज बली होवै नईं ॥

मै टोळधा 'व्यायामसाळा' रै अखाडे ऊपर लिखियोड़ी है । उठे रो वातावरण ई इसो हुवै के शरीर ने बलवान बनावण री मन में इच्छा हुवै । भर पहलवानां ने 'जोर' करता देख'र तो मन आनंद री हिलोरधां लेवण लागी । सौ-पच्चास उठ-धैंठ लगाय'र, दो-च्यार हाथ भोगरधा रा घुमाय'र बूकिया फूलाय'र, मलमल रै चोळीं मांय सूं सीनो ताण'र चालणभाळा, खुरसण्डिया पहलवान तो आप रो मन राजी करिया करै है वण असल मे पहलवान वो ई हुया करै, जिको बल सूं भरपूर हुवण पर भी नम्र हुवै, चोखे चाल-चलण रो हुवै भर हार-जीत नै ऊमर भर नही बोवै ।

पहलवाना रो कार्यक्रम ई इसो हुवै जिके मे कसरत करणी, जोर करणी, खुराक खावणी, भर नींद लेवणी । तीन बज्या आभरके उठ'र, निमट'र, कुरता कर'र आदभकद काच रै साथै 'हुं हुं हुं हुं' शुरू हुवै भर भोर हुवण तक छई-तीन हजार रो गिड़को लगा'र निचोता हुवै, डड-बैठक लगाय'र । फेर जोर कराईजै, आयोडे छोरा छण्डा नै । भर फेर ? फेर दो-तीन जणा नै कमर ऊपर बैठाव'र अखाडे में चक्कर लगावणा पड़ै । वण अखाडे सूं बार नौसर'र मिट्टी भड़्कावतै ई मिदामा नै दूध में छानियोड़ी

ठंडाई तयार रैवै । फेर आराम व्यायामसाळा में ई । हां, फेर मालिश रा दो हाथ लगाईजै । घर जीमण नै बैठै जणै पाव-तीनाना धी मे सिकियोडो कबो आटे रो, बिदाम रळियोडो ।

सिद्धा फेर तीन बज्या सूं सागो घन्धो ।

बल रै सागै कळ ई चाईजै । कळ रो काम बळ सूं नईं चालै । आंधो जोर बिना डाव-पेच कईं काम नही आवै । आप रै जोर सूं आप नै ई पडणो पडै, अखाडै मे । इयं वास्तै केई-केई डाव अजमावणा पडै । डाव पेटेंट करण रै सागै-सागै 'काट' रो ई अभ्यास करणो पडै । मुलतानी टाग, काळाजंग, अण्टी, घोवी पछाड, बगळी इत्याद केई डाव पहलवानां रै पेटेंट हुवै । बां रै डाव ऊपर आवतै ई जाणै धड़ाक सूं डाईं मण रो बोरी नीचै पडी है । हाथ मिलावता ई पहलवान एक दूसरै नै सोल लै ।

भाज-काळ पहलवानी करणी घणी महणी पडै । तीन चीज्यां खावण नै मिलै—लालचन्दजी, डालचन्दजी अर आलचन्दजी—धानी लाल गेहूं, डालडा धी अर आलू रो माग । अरवै बसाधो, हुसी कमरत ? अर बिदाम रा भाव सुणतां ई 'सीधो-दाऊ' चढै । दूध रो जाग्यां मिळै चाय । वैं में ई नाप रो दूध—एक कप मे सोळै टोपा । रोटया मिळै छम-छम्मा भात, चिमचै रो लारलो पासो खाली रगडियोड्यां । जमी माय सूं ऊगै कोनी, इत्तै तेल-लूण-लकडी रा भाव जाणणा पडै ।

पण पैलां लोगां नै सौख्य हो । वैं मयै एक पहलवान तयार हुया—एक छोटी सी बात ऊपर । बां नै आज तक लोग पहलवान साहब नांव सूं पिछाणै । बात आ हुई की एक बार बा रा पिताजी दंगल देखण नै गया । नामी पहलवानां री एक जोडी अखाडै मे लड रही हो । मोकळा जणा भेळा हुयोडा कुम्ती देत रैया हा । इत्तै मे ई एक अबाज गूँजी—  
“शाबास, काळूतिथ ।”

आ आवाज पहलवान साहब रै पिताजी री हो । बग बात बघमी अर काळूतिथ सूं लडणआळै पहलवान तानो दियो के घरआळै बेटे नै तयार करैर लड़ावो, जणे ठा पडै । आ बात पहलवान साहब रै पिताजी रै

खटकगी। वैं घरे गया घर बेटे नैं तयार करण रो निस्चैं कियो। दो ब्यार दिना बाद ई बेटे नैं आसीस देय'र कानपुर भेजियो। सार्गें दोय भायला नैं भेजिया। रुपिया री कमी नईं ही उठै, भगवान री दया ही।

पूरे घट्टारें मइनां बाद वैं तयार हुय'र सैर धाया। लोगां री बाक फाटगी, पहलवान साहब रैं भीम जिसें क्षरीर नैं देख'र। पिताजी आसीस दी, सुयकारो धालियो, आखर वैं पहलवान सू' कुस्ती तैं हुई।

कुस्ती रैं दिन अखाडें में भीड रो पार नईं। दोनों खानला तयार हुय'र पहुंचिया। समैं हुयो। दोनूं जणा लंगोटा-कछणी कसियोड़ा अखाडें में उतरिया। वो पहलवान आपरें उस्ताद रैं पगैं पड'र बोलियो "या अली" घर पहलवान साहब आप रैं पूजनीक पिताजी रैं पगैं पडिया घर अखाडें में कूदता ई "या बजरंगी" री हुंकार करी। फेर काईं डील ही? भट सू' हाथ मिलाया घर डाव लागणा सुरू हुया। पैलाआळ पहलवान टांग मारी, पण पहलवान साहब टांग बचाय'र, आंग्व भंफैं इत्ती देर में ई वैं नैं उठाय'र इसो जरकायो, जाणै सिला पटकी हुवैं, घर एक छिण में ई चित्त कर'र वैं ऊपर बैठ'र बोलियो—"वयों छोड़ू? हुयणी कुस्ती?" अैं सबद सुणना हा कै जनता अखाडें में कूद पडी घर पहलवान साहब री जै-जैकार सू' आकाश गूंज उठियो।

वो दूसरो पहलवान ई कम तगड़ो नईं हो, पण जमी जिकै नैं वर देवै, वो ई जीतै। इयै वास्तैं वैं पहलवान, वैं दिन सू' ई कुस्ती लडणी छोड़ दी।

पहलवान साहब रो पूरो नांव आसारामजी है, पण वा नैं मा'रजा भी कैया करै। कसू'बरा पेचो, धोळो चोली, गळें में दुपट्टो धारण करण आळा मा'राज हिरदै रा दयालु है। वैं ईश्वर रो भजन करै घर हरेक री पीड़ में आडा भावैं। अखाडें रैं सगळा जणां नैं आप रा टाबर गिणैं। वैं अजै ई जाणै कूदता चालै।

मा'राज रैं जीवण री आ विशेषता है कै इत्ता बडा पहलवान हुवणें पर भी वां कदेई केई सू' राड़-भोड़ नईं कत्रियो। वां रैं खुद रैं व्योपार है, गरी है घर व्यापारियां में वां री पूरी साख है।

एक बार री बात है कै मयरा रा दो नामी पहलवान (भाई-भाई) व्यायामसाला में पूगिया भर मा'राज सूं जोर करण री इच्छा प्रगट की । मा'राज वै समे घर मूँ आया नईं हा । इयै वास्ते वां नै ठैराया घर सिध्या-दिनुं मे जोर करावण री बात उठै बँठोटा आदम्या कैयो । खैर भला, मा राज नै परे भट मूचना भिजवाय दी । मा'राज वै समे आयाई नईं गया ।

सिध्या नै सगला जणा बँठा हा । गप्प-मण चाल रईं ही । वै दोनू पहलवान ई बँठा हा । इतैं में ई एक महानुभाव व्यायामसाला मे बडिया । वा नै देखतैं ई एक जणै कोई—“भावो सेठा, क्यों जोर करसो ?”

“विचार तो कम ई है ।”

“काईं कम है ? मयरा रा मैं पहलवान आया है । मा'राज सूं जोर करणो चावै, पण मा'राज गांव गयोहा है, इयै वास्ते आप ई रमाय देवो, थोड़ी ताळ ।”

“तो सगला री ज्यां मरजी ।” आ कैय'र वा कपड़ा लोलिया, लंगोटो कसियो भर कच्छी चढ़ाय'र आखाई मे प्रवेश कियो । वा माय सूं लूँठो पहलवान ई भट त्यार हुय'र कूदियो, आखाई मे । दोना हाथ मिलाया भर जुटग्या । फेर 'सेठा' डाव लगायो भर वो पहलवान चित्त । बस, फेर काईं डील ही उठै ? भट आवाज आई “व ह-वाह, मा'राज !”

आ आवज सुण'र वै पहलवान नै चेत हुयो कै सेठ दीसण आळ जिण पहलवान सूं वो लड़ियो हो वै मा'राज ई हा । वो धनो शरमिन्दो हुयो ।

## मारजा

बालू सूँ निसरै तेल चावै ऊट समुन्दर पार जा ।  
 और सब तो हुय जाय भलाई, भोजन तजै न मारजा ॥  
 मिसरी छोड़े मधुरता चावै रैण चांदणी हुवै अमा ।  
 सो योजन भी दूर होय पण भोजन तजै न मारजा ॥

‘मारजा’ जद गल्ली-मुहल्लै सूँ निसरै जणै ‘पगैलागू’ मारजा ...  
 पगैलागू’ मारजा’ री भ्रणकार काना मे पड़ै । ‘जीवता रैवो, खुश रैवो  
 री आशीस मारजा देवता बँवै । वै महाजनी रा घणा जाणकार अर पढावण  
 नै बहुत हुगियार है । ट्यूशन करणै सूँ इत्तो लगाव कै नई केई नै ई कै सकै  
 नही । मित्तर बरसा री ऊमर ताई’ दिनुंगै च्यार बजी सूँ साढ़ी दस  
 बज्या ताई चू चावता रैवता अर स्कूल सँ आय’र फेर पाच बजी सूँ रात  
 नै नव बजी ताई’ बाई भाळणी, पण फेर ई घापता कोनी, वै । एक री  
 कसर अदीतवार नै निकाळता । आखर सित्तर बरसा में रिटायर हुया स्कूल  
 सूँ अर बेटा रै कैयां सूँ ट्यूशन में कमी करणी पड़ी । अर च्यार सूँ  
 वेसी कारण री सोगन खाई है । वै कैया करै कै ट्यूशन करणै आळां रै तीन  
 मइना घाटीक हुवै—अक्टूबर, नवम्बर अर दिसम्बर । इण रै बाद जद जन-  
 वरी आवै अर दिन बघणा शुरू हुवै, जणै म्हारी खुशी ई बघणी शुरू  
 हुवै ।

मार्य पर बोदी सीक चीटो जमियोड़ी काळी लम्बी टोपी, स्पार्ट

घायोडो कोट, मैली धोनी घर पगा में दो तरें गो जूनी वैगियोड़ा घर हाथ में चटो घटी (टाइम पीग) नियोड़ा मारजा घना प्रभिद है।

मारजा लैण-दैग ई करै। मणिया घोवार देवन रो घर फेर दावा-फरियाद कर र तामोल्या कगवण रो वा नै गोक है। वा रो एक बेटो मैया करै के म्हारें भा जो नै समाजवाद रा भगुवा समझणा बादजें के आपरें घन रो पैला मूं ई बटवारो कर दियो, जरूरत मंदा में। पण मारजा ब्याज रो एक टक्को छोटछण रो टैम ई घणा भुगी हूयें। ई कैदा मरै के मिनत कमार्बे आठ घण्टा घर ररिया कमार्बे चौईत घण्टा।

मारजा आधा बकील है। ई पैदल कचेष्टी जावै, हयें पिचतर रो उमर में। जूता पैरण रो अभ्यास नई। घणा कैयें जणें आजकाल 'पगरणी पेरें घर वियें नै भागै जाय'र हाथा में ले लें।

वा नै एक बकील ई इसो मिलियोड़ो है जिको बिया सू डरै। वो 'पुराणी बकातात' रो परीक्षा पास है। ई एक दिन मारजा नै दबी जवान सू कैयो के च्यार घण्टा हुयभा, आपरा दावा निखतो, सबै कईं गरमास तो मगावो। आ सुण'र वा मूजे भाय मूं दोय मींग निकाळ'र व नै दिया। घर कैयो के भगली गरमास तो द्या में ई है।

मारजा रो आदता सू घणा सी हाकम ई जाणकार रैवै। कदैई हयें रो फायदो ई मिलै। वा (मारजा) एक दफै एक जणें ऊपर दावो करियो। ई मुदायलें जबाबदेई करी के रुपिया रै पेटें मारजा नै दूध पाव दियो। 'इयै वास्तै गवाया भूगती। धावर में बहस हुवण' लागी। मारजा रै बकीलें बहस करेता थका अरज करी—'गरीब निदाज गवाया सू तो मुदायलें री जबाबदेई झूठी हुय ई जावै पण आप एक बात रो गीर फरमावो' के मारजां किसी पोसाक पेरै अर वा रो आदत काई है? जद मुद्ई दूध पीवणो शुरू कर देसी तो फेर 'मुदायस्ता नै दूध पीवण रा सोसा ई पड़सी। मुद्ई पईसा बचावै गेट भोम'र अर मुदायला दूध पीवै, रबडी खावै अर मीज उड़ावै, ई जिस मक्कीबूसा खनै करज लेव'र ब्याज रो लोभ देलाय'र। आपरा मारजा जीतिया, ई मुकदमे में।

मारजा आपरै शरीर ऊपर दया नई करे। वै कठैरी ईकिसरै आपरै शरीर ऊपर काढे।

एक बार वी-री-जेब मीय सून किणई रूपिया कोठे लिया।

वै बड़ा दुखी हुया, पण करता काई ? हा, वै महीनै दस रुपिया री कसर काढी-च्यार री जागा दोय 'रोटी खाय'र अर सरदी हुवतां थकां ई सीरख नई कराय'र टाट ओढियो, रात्या में।

मारजा री पीडी एक दिन कुत्त भाल ली, सारै सून आय'र। पण वा पाव मू पैकी आपरी पछियं जिसी मँलोडो घोती नै सभाळी अर सतोप मू कैयो—'आई चोनी हुई कै घोती नई फाटी। चामड़ी तो फेर घाय जाती।"

मारजा बेटा नै पईसा देवता दोरा हुवै। जद कोई बेटो पईसा मागै अर वा नै देवणा पडै, उपरिया कर जद वै कैवै—'लेय लो वन्ता। म्है तो गून देच'र चादी भेली करी है। घानै काई जोर आवै, अनाप-सनाप खरच करते। म्है तो हाडा रा बिलोवणा इयाई बितोया।"

एक दिन मारजा रै बडोड' बेटे वा नै हेसो करियो—'भा जी, थारै 'मनीओडंडर' आयो है।"

आ सुण'र वै भट हेठे आया अर पूछियो कै कठै है ?

वै कैयो—'ओ पुरजो है, कासीरामजी री दूकान रो। छोटोड़ो बेटो आपरो चौतीस रुपियां री ओधार कर'र आयो हो, कपडा री। बियै रो तगादो है। तगादो 'मनीओडंडर' ई तो हुवै कै आप मनी (रुपिया) चुकावो।"

आ सुण'र मारजा चुपचाप रुपिया चुकाम'र भरपाई री रसीद ली।

मारजा हजामत अर दाडी बेटां खर्च करायै। कोई पूछे जण कैवै—'म्हारै केस कठै है-? ओ छोरा केस राखै ई-कोयनी। हू तो भेड हू, धार्य-जिको ई मूंडै।" रुपियां री हजामत करे, जिका नै केसा री हजामत ई करनी-पड़ै। किरियावर कर्न करे।"



“धारा पईया बचावै” आ धान केवण घाळें नै वै उपळो देवें कै  
म्हारा किणरा पईया बचावै ? धै आपरा पईया बचावै ।

मारजा कर्दे शीज नै पासतू नई जावण देवें, इयें वास्तै ई जद वां  
रो बेटो बीमार पड़ियो भर वै नै मोसम्बी रो रग देवणो पड़तो तो लारलो  
पूँथो धै आ कैय’र गाय लेवता कै— इयें बीनण्यां रै हाया मे जोर कोय  
नीं, पूरो कम नितरै ई नई इया गूँ, मोसम्बी रो ।

मारजा बेटां नै घणा नई पढ़ाया । वां तो द्यूगन रो ध्यान घणो  
राखियो । घणां धरसा पैली वा रो बडोडो बेटो दसवीं रो परीक्षा देवतो;  
पण नतीजो आवतां ई वै रा लम्बर अगवार मे गायब रैवता, इयें वास्तै  
धै पैवता कै इयें ‘शिबू’ मै तो ‘बोह’ घाळा दगै सूँ फैल कर देवै । वै  
जाणै कै इया खनै पईसा है, इयें वास्तै फैल करै अगलै माल फीस लेवण  
सातर । गरीब नै फैल करै तो वो अगलै बरस बैठे थोडो ई ? इयें  
वास्तै पईसां घाळा रै छोरा नै घणा फैल करै ।

पण भावी-जोग रो बात । वां रै वै बेटे रै नांव रो तार आयो,  
पास रो एक साल । वै जमाने मे तार बहुत कम आवता । तार आवणै सूँ  
वै बडा राजी हुया । प्रसाद करियो, भर बाटियो घर आळां मे । लिखमी-  
नाथजी रै मिंदर में ई प्रसाद चढायो भर पौशाक पैरवाई । पण दूसरै दिन  
एक जणै आय’र तार मागियो । वै कैयो कै काल म्हारै नाव रो तार  
गलती सूँ आपरै अठे तारआळो देग्यो । आपरै बेटे रो भर म्हारो नाव  
मिरीसो है ।

“कुण दियो तार धने ?” मारजा पूछियो ।

“मदनमोवनजी वर्मा ।”

“क्यो, मदनमोवनजी वर्मा धनै ई जाणता हुवैला ? और केईनै ई  
को जाणनी । जाय परो बोलो— बोलो, नई तो तीसरी करांला ।”

वो तो गयो, पण गलती सूँ तार आवणै सूँ मारजा रो बेटो किसो  
पास हुवंतो ? नबरा रो लिस्ट आई, जिकें मे फैल । मारजा घणी ई लिखा  
पढी कराई— लिखवायो कै म्हारै पास रो तार आयो है, पण सब फिजूल

रो रामकृष्णो हुषो । धागर मारजा बैठे नै कैंयो— “म्है धनै पैलाई कैंयो हो नीं कैं बियै रो तार देय दे । नईं दियो जणै करवाय भायो नीं फैल ।”

पण एक खास बात है कैं मारजा समाज में नेकी रा काम करण नै ई पीछे नईं रैंवै । ‘भाईपा’ करता थका धर ‘दशणा’ करता थका धै पणा राजी हुयैर जी खोलैर खरच करै ।

मारजा नै बेटा तीरख-वत करण री धणी घंघूणी सगावै जद वैं उयल्लो देवै—“कईं है तीरखां में ? इसी ई लुगायां, इसा ई भादमो, इसा ई ईंट खूँ रा धर, मन्दिर में इसी ई भूररया ।” पण धणो दबाव पड़ियो तो बां नै च्याहूँ धाम करना पड़िया ।

मारजा नै सरीर में की चिकणास घाळण रो कैंवै जद बेटा नै उयल्लो देवै—“भरै बन्नां, लावो-भीयो म्है, जिका नै सालचन्दजी, घालचन्दजी धर डालचन्दजी मिन्नै म्है तो मोकली चोग्या खाई है, हूं लोकां रै किता कम जीमण जोमियो हूं धर धाज ई म्हारै नूनां री कमी नईं ।”

मारजा चीज-वस्तु कदेई गरीदर ल्यावै तो धरै धायैर एक टूटी-फूटी ताकड़ी में तोलै । एक दफै मोठ च्यार सेंर फड़ां मूँ ल्याया धर तोलिया तो पाव भर कम । फेर कईं कसर रैंवती उठै ? खेलै चांद्यां नै सागै लेयैर, गमछे में मोठ बांयैर, ताकड़ी-बाट सागै लेयैर फड़ बाजार पोंग्या । दुकानदार दूर मूँ ई मारजा नै देखिया धर भट-पट बा रै खनै जायैर बात सुणी धर बा नै उठै ठैरायैर, पाव मोठ ल्यायैर, माफी मागैर खानै करिया ।

‘मारजा’ नै देखैर ‘अर्थशास्त्र’ रै एक प्रोफेसर भाइ धणी इचरज करियो । बां कैंयो—“म्है तो नाम रा ई अर्थ शास्त्र धरिया,

1 साल गऊँ, साल रो ई भाग धरै धाण्डा धरै धाण्डा, भाण्डा

भगती प्रोफेसर तो भारमा जी हैं। इयाँ नै एम. ए. रै छोरां रै सामने  
गढा करियाँ घसली धरयमास्तर हाफेई तामझ मे आय जगनै।”

घाजकाळ भारमा घान्त रैवै धर गोवंद भजन री यात करै पण  
पईगा तरपण रै वारै मे भजे ताई तरमीम रत्ती भर ई करी नई। धजे  
सँवै यो इयै मिट्टी रै धनियोई धरीर मे धारै मिता ई चोला-बोला  
पदायं पाल मो धर इयै नै कितोई मिजगार नैयो, पण ठुगी घागर रान ई।

❶



परिवार बधावण में । ये परिवार-नियोजन री घरखिलाफ काम करो । किणई जे रिपोर्ट करदी तो सोधा पोंच जावोला ।”

दी दिन पछै बो-“बघै परिवार-बघै परिवार कैवणो भूलग्यो ।

सुगनजी आपरै बेटे री बरी में बोरियो घर ठुस्ती लेयग्या । सगे नाक भी सिकोड़ी जद सुगनजी कैयो-“मालक सा'ब ! आप क्यो सोच करो । बाप री बरी घर सुसरै रै दायजें भूँ किसी पार पड़ै ? घर में बोरियो घर ठुस्ती तो घाली है । “बोरियो घर ठुस्ती, भागै गैना करावै तो बीन धीनणी री खुस्ती ।”

सुगनजी भट उथळो दे देवै । एक बार एक सेठानी बां नै पूछियो कै करवा चौथ रो बरत कद है ? जद वं भट बोलिया-“इयारत नै ।”

एक जणै बा नै पूछियो कै भाइयो आपरै कईं लागै ? वै बिगड'र बोलिया कै-“लागै” जिको कईं भूत-भूतणी हैं या कादो-कीचड़ है ? कोई बेपै रो घोडो ई है जिको लागै ?

मोकळा घरसा री बात है कै बा नै एक जणै कैयो कै बाट सा'ब भाया है ।

“तो गुड सा'ब नै मंगावो घर लाफसी सा'ब बणावो, पछै घी सा'ब रै लागै घरोगो ।”

“बाट सा'ब अग्रज है, आप समझो जिको बाट कोयनी-नेहुं'वा रो-” आ बात वै कैवण भाळै समझाई ।

सुगनजी कलकल ई रैयोड़ा है । उठे बा रामूजी में घणो खोटी करी । एक दफै एक भाकी ज्यो आवती ही । भालर घर छमछमा बाजता हा, भीड भागै बघ रई ही । वै मर्म रामूजी सुगनजी नै पूछियो कै भाकी कायरी है ?

जगन्नाथजी री । ये ई प्रसाद से भावो, आ बात सुगनजी कईं ।

रामूजी भीड में गवा घर प्रसाद लेय'र पूछा भाया । वै लावण लाग्या जद सुगनजी मुळकण लाग्या । इतें मे ई खने ऊभै एक मिनत रामूजी नै चेताया कै श्री जगन्नाथजी रो प्रसाद नई है, ओ तो मरियोड़ लारे बाटिजें है । देखो, सारे अरथी भावै है । जद बा री भाइया खुली ।

धजकाळ सुगनजी मसकरयां करणी कम करदी । बघ तो नई करी, कारण कै 'बादरो बूडो हुयज्यावे तोई फदावण सगावणी घोड़ी हो भूलै ।

## हाकम सा'ब

हाकम सा'ब शहर रै चार पायां मायमू' प्रधान गिणीजता हा ।  
वै भणीयोड़ा तो फंलसै ताई हा, पण राजाजी री किरपा सू' ऊचै पद पर  
भारूठ हुया । फेरू' काई' हो । वै तो समझ्या के अबै म्हारो कुण ई  
काई' बिगाड सकै ? पण राजाजी रै नांव सू' ई डरता रैवता ।

राजाजी सू' मिलण नै जांवता जद पैली भैरूजी नै मनावता ।  
भैरूजी रै सामने जाय'र पैली कस्तर फौजी सलाम देवता घर बाद में  
आपरा मगर हाफै ई थपथपावता । फेर दोनां खांधा नै थपथपावता ।  
इण रो मतलब हो कै हे भैरूजी! फाळ' मर मोरै दोना रूप आळा भैरूजी,  
म्हारै सागै हातो, दोनां खाधा ऊपर बैठ'र । म्हारी रिच्छा करीजो ।  
वै बाद में पगोधिरी-पगोधिरी ऊपर नारेल ई बोनता जायता । पण देवता  
उणां रै नारेल री उडीक राखता-राखता निराश हुय'र आशा छोड़  
देवता ।

हाकम सा'ब मिसल्यां रो फैसलो पेसकार कनै लिखवायता । पण  
वै हार-जीत रो निर्णय खुद करता । कैया करै हे कै फैसला देवण सू' पैला  
मिसल्यां नै भळी केर'र वै डेस्क ऊपर राख लेवता घर आख्या बन्द कर'र 'जै  
भैरूनाथ-जै भैरूनाथ' कैवता मिसल्यां नै थपथपावता, जिकी मिसल्या  
थपथपावण सू' नीच गिरती वै हाखती मर नही गिरती जिकै जीतती ।  
हाकम सा'ब कैवता कै कानून तो म्हारी जेब में है ।

हाकम सा'ब रै एक बार केई रो ई फोन धायो । पेगकार नै पूछियो-  
'फोन रो फोन धायो है ।'

पेसकार कैयो- 'नैनावतीजी रो ।'

"भना-भना फोन म्हुनै भट-भट । नैनावतीजी तू' हूं ईज बात  
फरीस ।" भा कैय'र फोन लेय'र कैयो- "हा-हा, नैनावतीजी घाप कठे  
तू बोखो हो । कई काम है फुरमावो ?"

इत्तै मे ई जबाब मिलियो- "हूं नानावती बोल रैयो हूं । तुगाई नही,  
भादमी हूं ।"

इत्ती गुण'र हाकम सा'ब खीझ'र फोन पेसकार नै पकड़ाम दियो भर  
कैयो- "बाळ-बाळ, ओ फोन तो केई भादमी रो है । नैनावतीजीरो कोनी ।"

एक चपरासी कई दिना तू' देरो तू' घाबतो इण वास्तै हाकम सा'ब  
एक दिन कैयो- "वन डे सेट टू डे सेट-डे डे सेट- यू को निकाल देंगे ।"

हाकम सा'ब रै पुराणी बग्गी ही, जिकै ऊपर कचड़ी जावता ।  
रस्तै मे जिको सलाम करतो, उण नै ई बैठाप लेवता । पण घागै जव  
दूसरो कोई सलाम करतो तो पैलै आळ' नै उतार देवता भर दूसरै नै  
बैठाप लेवता । ई कैवना- "लै भाया तू' उतर घबै, इण री बारी है ।"  
हाकम सा'ब री इण भादत तू' जाणकार लोग इयै वास्तै हाकम सा'ब  
री बग्गी मे बैठता ई कोनी ।

हाकम सा'ब रै मठै एक बार थाड हो । थाड में पिडत धायो ।  
भांवतै ई हाकम सा'ब पूछियो- "पिडतजी, आज रै दिन किती दसा चालै  
म्हारै ।"

"शानि री सा'ब ।"

इत्ती सुणनी ही कै हाकम सा'ब पिडतजी नै होज में गोतो दे.दियो ।  
आखर पिडत नै कैवणो पडियो- "घाप रै नही, म्हारै शानि री दसा है  
भाज ।" जव पाछो निकालियो मुचळषयां खावतै पिडत नै ।

हाकम सा'ब नै एक दर्फे एक नूवें वकील कैयो- "सा'ब आज रामूदे  
आळ' मुकदमें में बैस सुणवाणी है ।"

भा मुण'र हाकम सा'ब जोर सू' फँई—“काई—काई, बैस म्हेन गुणासो ? हूँ बैस मुणीस जर्ण फँसलो कुण करसो ? बैस पेसकार नै गुणाओ जाय'र ।” वकील देखतो ई रँग्यो ।

एक दफे हाकम सा'ब रै मामनै एक मुलजिम रा इकवालो बयान करावण नै पुलिस पेस करियो । हाकम सा'ब वैनै कैयो—“ले भाया लिता बयान ।” बे कैयो—“सा'ब, हूँ तो बेगुनाह हूँ । धाणैदारजी रो मार रै डर सू' हामळ भर ली ।”

बस, फेर काई डील ही उठै । हाकम सा'ब दण्डो लेम'र पढ़ा हुयाया घर कैवण नै लाग्या—“धूँ म्हेन धाणैदार सू' हेठो समझियो है कई' कै उण रै सामने तो डर सू' हामळ भरै घर म्हारो यनै काई' डर नई' लागै” मुलजिम घर-घर कांपण लाग्यो ।

एक बार हाकम सा'ब रै सामने एक मुकदमे में पुलिस ब्राह्म “फाइनल रिपोर्ट” पेस की घर मिसल दाखिल दफ्तर करण री भर्ज करी । हाकम सा'ब रपट कने मेल ली । लंच रै सभै पेसकार नै बुसाय'र रिपोर्ट पढ़वाई । पेसकार पढ़णी मुरु करी—

“सबै मा यैन यह वाफा हुआ । ..

इस “.... “ .....

“बस-बस भागै पढ़ण री जरूरत नई, हूँ समझ्यो । इण मे पुलिस ब्राह्म जाण बूझ'र म्हेन फसावण री बाल बली है कै मुलजिमा नै छोड़ू' घर बाबलियो (राजाजी) म्हेन लाय जावै । हूँ नई' छोड़ू' मुलजिमा नै । सब री मा बैण रै सागे वाका हुवै घर पुलिस ब्राह्म लिखै कै छोड़ देवो । हा तो मुलजिम कुण-कुण है पेसकार जी ?”

पेसकार पढ़'र बताया—“सा'ब भगरियै—मगरियै रो नांव बार-बार भायो है ।”

हाकम सा'ब हुकम दियो—“भगरियै मगरियै नै छः छः महिना री सजा । ओर कुण रो नांव भायो है पेसकारजी ?”

“सा'ब एक चूंकियै रो नांव भी तीन-चार बार भायो है ।”



“तो चूकिये नै ई तीन महिनां री सजा लिख दे।”

हाकम सा'ब फैसलो लिखाय'र बड़ा राजी हुया अर तिकायत रें डर सूं बच गया। पण हुवण भाळी किती टळै। इण फैसलै रें खिलाफ अपील हुई।

अपील री सुणाई रें समै सरकारी वकील अजं करी—“गरीब निवाज, इण मुकदमै में मुजरिम कोई है ई नही। इयै वास्तै जेल किण नै भेजा ?

“... अगरिया-मगरिया व चूकिया' मुलजिम नही है, घै जो रिपोर्ट मे आयोड़ा 'अगर-मगर व चूकि' शब्द है जिकां नै हाकम सा'ब अगरिया, मगरिया व चूकिया मुलजिम समझ लिया। फेरुं एक बात धीर है। हाकम सा'ब “शबै मा बैन” री अर्थे ‘मक्की मा बहिन के साथ’ लगाय'र भयंकर गलती करी है। शबै मा बैन री अरथ “आधी रात में हुवै।”

“बस-बस” जज सा'ब कैयो। अर फैसलो लिख'र सुणायो। फैसलै रें अनुसार अपील मंजूर कर'र बँ मुकदमै में फाइनल रिपोर्ट मजूर करली गई। वै फैसलै री एक प्रति राजाजी नै भेजी। फैसलो पढ'र राजाजी हाकम सा'ब नै आपरै घरै भेज दिया।

●

## सेठाणी

“सेठ चावै नाराज हुय जावै पण सेठाणी राजी रैबणी चाइजै”—भा सील सेठ-सऊकारां रै नीकरी करणै सूं पैता दिरीजिया करै हे ।

सेठ साम्बन्दजी नामी सेठ हा, पण बां री सेठाणी सगळी तरै सूं बां ऊपर कब्जो कर लियो हो । अर करै क्योनी ? सेठ किसो-चोसो काम कियो कै—सत्तावन घरसा री उमर मे दूसरो ब्यांव कियो । पर सेठ बिचारो करतो ई काई ? एक बात इसी घटी कै बै नै दूसरो ब्याव करणो ई पडियो, बात राखण खातर ।

बात भा हुई कै एक दफे सेठ जोमते दही मागियो । बेटे री बऊ कौवायो कै दही तो बयग्यो । खैर, भला । थोडी देर बाद बै रो पोतो आयो घर कैयो कै दही तो भाज चकको-धक्को जमियो । मोळो-गुट्ट हो । हुणै-ई लाय'र आयो हूँ । भा सुण'र सेठ रै काळजै तीर लागग्यो । सोच्यो कै प्रब हूँ ‘डिच-डिच’ री रोटी नईं खाऊ । इण वास्ती बखता-बखत मुनीम नै भेज'र आपरी सगाई कराई अर थोडे दिनां बाद ई ब्यांव हुयग्यो । सेठाणी घरै भाई । सेठ नै लोगां रै इण कयाणे री परवाह नईं ही कै—“तेरै वरस री बीदणी, सत्तावन रो है बीद ।” चिक्—चिक् थोड़ा दिन हुई अर फेर हुवा भला । ‘नू’वी बात नव दिन अर खाची-तांणी तेरै दिन ।’

सेठ सोच्यो कै रोटी तो मुल री मिळगी । सेठाणी गाय री ही अर गरीब घर री बेटा ही । घाय-भाई खेतो करता हा ।

मेठ रै भठै पूजा-पाठ करण आळा महाराज बागौती सूं आवता ।  
तीन पीढ़ी बा देखी ही, मेठ री । सेठाणी एक बार रीब मे बा नै पूछ  
लियो कै बाबा हूं म्हारै बाप रै बेटो हुवती तो ठीक रैवती का नई ?

“हां, ठीक तो रैवतो । फेर पड़ियो एक धोरिये सूं बीजे धोरिये,  
भायां सारै फिरतो ऊठ री पूछ पकड़र अर मीगणा चुगतो रैवतो । अर  
चैत-वैसाख में पड़ियो फोग बाढतो रैवतो ।”

आ सुभर सेठाणी घणी नाराज हुई पण करै तो काई करै, कारण  
कै महाराज सिद्ध गिणोजता ।

सेठाणी ज्यो-ज्यों घर री बागडोर संभालण लागी त्यों-त्यों डेढ़-मैणी  
हुवण लागी । तीन नोकरां री जागा एक राखियो । बं सूं गर्ब जित्तो  
काम लेवती अर कैवती कै चारै पगां रै तो मंदी लागियोड़ी है । जूं री  
मां ज्यो जाणै जुळै । जावै जठै ई बिडचिण हुय जावै ।

पण नोकर री विचारै रो काई कमूर ? पाच-मात जागा जावणो  
पड़तो, संदेसो जेय'र । हुकम मिलतो—“बैदराजजी रै जाग्रे, रस्ती में बागी  
बाई रै सवेमो करीज, मारग मे बाजार पडै जठै सू साम ताम्रे, मिरच  
अदरक-धाना-पोदीणो, चूंगी रा ताम्रे ।” दुरती वेंळा फेर कैइणतो कै  
पिण्डतजी नै कैवतो जाग्रे कै चानै बुलाया है । इतै कामा री लिस्ट  
हुवती अर ऊपर सूं भिड़िया दुनिया भर री । पण नोकर काई कैवतो  
नई । बो जाणतो कै म्हनै थोबो ही कैवै । ‘पमार नै कैवै । कैयण देवो ।’

सेठाणी मुतलब में पक्की ही । बा काम पड़तो जणै मोठी-मामी  
वण जावती । आसागीर केई आवता वै रै खनै । बा महीनै-दोय महीनां  
काम कढवाय'र फोसियोड़ी अर बोदी घोती घोय-धोवाय'र सांवट-सावटाय'र  
दे देवती ।

सेठाणी आपरै पोहरै आळा नै चावती । बा आपरै भतीज नै खनै  
राखती । वै रा भाई-भतीजा पनगण लाग्या, वै रै सहारै सूं । कंया ई करै—

सासू तीरथ सुमरा तीरथ  
तीरथ साळा-साळी ।  
वचने-वचने साढू तीरथ  
बडा तीरथ घर वाली ॥

इण वास्तै सेठ तो क'ई नई कैय सकतो । सेठ जानतो तो हो कै  
भीत नै खाय आळो घर मिनख नै खाय साळो ।

हां, तो सेठानी रै भतीजै नै पढ़ावण नै एक मास्टरजी आवता ।  
दधूशान री फीस पन्द्रै रुपिया ठेरिया । जब महीनो पूरो हुयो जणै सेठानी  
वां नै सात रुपिया भनाया । मास्टरजी एतराज करियो, तब सेठानी  
कलेंडर निकाल'र हिसाब बतायो—“चार दिन आप आया नई”, “... इयै—  
इयै तारीखां नै पैतालीस मिनट पढ़ाई करवाई, इत्ती कसर इयां-बियां  
हुई . . ।”

धा सुण'र मास्टरजी सात रुपिया लेय'र गिड़गिड़ावता हेठै उतरिया  
घर वै दिन भूँ सेठ री हवेली जावणो छोड़ दियो ।

सेठानी हुसियागी री कूचो ही । भगवान जाणै सगळी सैगाई वै में  
ई भर दी ही । वा एक गाय लेवणी चावंती ही, पण वै री इच्छया  
मुताबिक गाय मिलणी मुश्किल ही । वा कंवती कै—चोखी गाय हुवै, कबरी-  
फूठरी मुठिया सीगी हुवै, सूधी हुवै घर विलेठण बैड़की हुवै । दूध तो  
घर लायक च्यार-पांच सेर हुवणो चाइजै । सारै टोगडी हुवै तो ठीक रैवै ।  
हुवै जात आळी । “....”

“मोल किती'क हुवणो चाइजै ?” इयै री जवाब वा देवती कै मो-  
सवासै ताई मिल जावै तो लेय लेवां । इयां रामें-भगा जायां जणै तो गाय  
आळा मूंडा फाड़ै । वां री बूक घणी बडी हुवै । इयै वास्तै कठई भव्वै-  
सव्वै ई मिल जावै तो ठीक रैवै ।

पण एक जणै भा कैय'र, कै ग्रे सै वात्या तो पांच-छत्र गायां मे मिळै,  
एक मे तो मिळै नई, सेठानी री गाय लेवण री बात नै बूर दी ।

सेठानी रै साकूतै रै वेटै रो ब्यांव हो । वै आपरै अठै आवण भाळां नै पूछियो—“ये व्यांव-शादी मे साफा बाधो का पेचा ?”

“साफा बाधा ।” आ बात साफा मिलज’री आसा में एक जण कैई । पण उठै किता साफा भिसता हा । ‘काकड़िया कंवळा हुवता तो स्याळिया जदैई खाय जावता ।’ मेठाणी इण वास्तै मट कैयो—“तो आज मै जणा साफा बाध-बांध’र आया, मन्नू री वरी में चालणो है ।” सै ताकण लाम्या, एब-दूसरै रो मूंडो ।

सेठानी मोर पाल्हा रो सोनो उतारण आली हो । वा दरजी नै कपड़ो सीवणो देवती जद तोल’र देवती घर कैवती कै कातर पूठी लामे । वा सीमोडा कपड़ो नै अर कातर नै पूठी तोलती । दरजी वै रै कपडा में फाई बचाय सकतो ?

पण मेठाणी रै मुख री घडी थोड़ा बरस ई तिल्वियोडी ही । सेठ रो शरीर छीभण लाम्यो । घणी-ई दवायां दिराई अर इलाज करवाया, पण उपाय तो आय रा है । ‘छूटी नै किसी छूटी’, इयै वास्तै सेठजी पूरा हुयग्या अर सेठानी नै घणो-सीक जीवन (पुराणी रीत मूँ) बुमेड’ मे ई दितावणो पड़ियो ।

## जीमाकियो

“भूख सूं मरणवाळा री घरचा केई वार भलबारा में छवै, पण धनो जीम'र मरण' री खबर बहुत ई कम वार छवै”—घा बात रामूजी कैया करै । वं पैला गांव मे रैवता, भबै शहर मे रैवै । रामूजी जीमण रा प्रेमी है घर खावै भी की-न-की विशेष । एक दफै रामूजी घापरै सासरै गया । सामरो गांव मे हो । छोटा ई हा जद । सकै सूं कम जीमिया । दोय-एक घंटा बाद भूख लागी । करै तो काईं करै । टैम बितावणनै एक दूकान ऊपर जाय'र बैठग्या । दुकानदार उणां री गत जाणग्यो, इण वास्तै एक तरकीब भरपेट जीमण री बताय दी ।

सिध्यां नै रामूजी जीमण बैठा । छोटी साली पुरख'र घाली लाई । घाली मे दो फुलका हा । रामूजी एक फुलको निकाल'र कैयो—“घो पूठो से जावो ।”

“इत्तै सूं काई हुसी ?” साली कैयो ।

“तो इत्तै सू ई काईं हूमी ?” घो जबाब रामूजी दियो ।

ईं बात नै उणा रै सुसरै सुणली । बी समझग्यो । वं रामूजी नै घापरै जीमावण री बात घर में कैई । रामूजी घापरै जीमियो तो सई, पण दिनूंगे ई सीख मिलगी, सासरै सूं ।

रामूजी जीमण जावता जद चश्मो लगाय'र जावता । एक दिन एक जण मजाक में पूछियो—“थे धनो कियां खाओ ।” जद वा जबाब दियो—

“देत, म्हारें जीमता चड्यो तागियोडो रेंव ! इण मूं जिनस बहुत छोटी दीसै । बडा-बडा लाडू ई पबोइया जिता-जिता दीसै, जिकें मूं घणा राइजै ।”

रामूजी रें घरें एक दिन थाळ हो । उणा रें एक भायलें कैंपो—  
“आज थे जिता लाडू तासो इत्ता ई हूं गाईम ।”

“जद थारें घठें भा शतें सगाया”—भा कैंप'र रामूजी चळू कर'र उठ्या । उठतै-उठतै उणा कैंपो—“हूं इत्तो मूरत घोडो ई हूं कै म्हारें घठें शतें सगाऊ ।”

एक बार एक सेठानी दोय माडू भर पांच पूइयां थाळी में मेत'र, रामूजी रें सामनै राखी । रामूजी सेठानी नै कैंपो—“एक माडू पूठो तो लेय जावो ।”

“कयों ?”

“तो और काई करूं ? आपनै पुरसणो ई नई आवै । रामूजी नै एक पूड़ी घालिजै ? लाडू पैलडां पुरसावणी में सात, फेर दूसरी में छव तीसरी बार पाच, चौथी दफै च्यार, पांचवी दफै तीन, छट्ठी दफै दो भर सातवें पुरसारें में एक घालीजै । फेर रामूजी री इच्छा हुवै तो मांगै जिता देवणा । सात बार-तो बिना मागिया ई पुरस देवणो ।” सेठानी देखती रैई ।

एक दफै वै कठई जीमण गया । थाळी लागी भर बांस में सै चीज्या सामनै आई । रामूजी हाथ लगाय'र देखियो तो माथो ठण्कण लागो । पूइया बासी भर मिठाई केई दिना री ही । वै हाथ जोड़'र आव्या मीच'र बैठ्या । भर कैंवण लाग्या—“हे ठंडी पूइया; थे म्हारी लारो इसा-इसा सेठ-साऊकारा रें अठई मत छोडिया ? थे तो म्हारें लारें पड्या । घर थाळी तो सूखा टिककड खावण नै देवई है, अठै जीमण में ई इसी पूइया पिण्ड छोडै कोनी ।” भा सुण'र सेठ चमिन्दो हुयग्यो ।

एक बार री-बात है रामूजी एक जाया जीमण गया । वै जीमता

हा कै सेठ रो छोटी पोती बार-बार भाय'र कैयन लागो—“हूं सीरो लेईत, हूं सोरो लेईत ।”

सेठ दोय-तीन बार वै नै मांय भेजियो, पण धो पूछो रोयतो भाय जावतो । भातिर सेठ मांय गयो भर कंई—“सोगे वनूं नई देवो इन पणू नै ?”

“सीरो तो भवै कोयनी”—भा बात धीरं नू मेठाणी कंई ।

सेठ भा बात सुण'र पणू में ओर मूं कैयनो सुरू कियो—“रो ना बेटा, रामूजी नै पैली जायन दे, फेर भाषां सँ जगा लागै ई चंड'र रोता ।”

भा बात सुण'र रामूजी उठ'र आपरै घरै गया ।

रामूजी एक बार पैलड़ा शहर मे आया हा, कचड़ी रै केई काम नू । शहर रो टेंगण पर उतरिया कै एक जने भाय'र कैयो—“भाषां रै घटे ठहरो ।”

रामूजी वै रै लागै गया भर उण रै उठै ठहरग्या । वै पूछियो—“दूध पीतो या चाय ?” रामूजी दूध ई मगामो, सोबियो कै चावड़ी सू माथो घुण लगावै ।

वो मिनख एक बड़ी गिलास लायो । रामूजी भट गटकायग्या । वै पूछियो—“फेर लाऊ ?”

“लेय आवो ।” रामूजी कैयो । इयां करता करता रामूजी भाठ गिलासां गटकायग्या । फेर निमट'र न्हाया घोया भर जीमण नै बैठिया । वै मिनख पूछियो—“कच्ची रसोई लाऊं वा कंई मोठी-चूठो ई लाऊ ?”

“मोठो लेय आवो ।”

रामूजी सूय डट'र जीमिया । वै सोचण लाग्या । म्हारलै वापू रै किता जणा सैधा है कै इती आवभगत करै । वै चळू कर'र आपरो धेलो सेय'र रवानै हुवणनै लाग्या भर कंई—“घन्यवाद है यनै भाइड़ा । फेर मिलीस भाय'र ।”

“मिलसो जिका तो चोखा पण सात रुपिया दन भानां रो बिल चुकाय'र जावो”—वै मिनख कैयो ।



“વિલ કોઈ માત રો ?”

“યાં દૂધ-મિઠાઈ ફટયાદિ સાચા જિવં રો !”

“તો છે મ્હારલે વાપુ રા સંપા કોનો ?” રામૂજી દ્વચરજ મૂં  
પૂછિયો ?

“કિસો વાપુ ? ઓ તો હોટલ છે-હોટલ ! પર્દસા દેવો, ફેરું જાયા  
ઘાગે !” રામૂજી દેવતા રૂં રેયા । પણ ઉઠે વસ કાઈં ચાલે । ઊળ દિન વે  
માત સાચાયા । ફેર પર્દસા પુકાય’ર, વિના સોચ્યાં સમઘ્યા, ઘણે સાવળ રી  
સોગન સાપલી ।



## मुनीमजी

पेला लिखें भर पीछें दे,  
भूल पड़े कागद सूं लें ।

मा बात मुनीमजी री जवान पर रैवती । ये हरएक कलम नै चौकस देखता । उक्त तो बां में घणो हो-ज, जणै ई तो 'हैड मुनीम' रो खिताब मिलियोड़ो हो, पानै । सेठ रै घर मे छोटै-बडै हरेक काम में बा री सहला रै बिना पत्तो ई खड़कतो कोनी ।

केसरिया पेचो, सफेद भवक युगलै री जात रो कोट, जिकै मे सोनै री गुंढपा लागियोड़ो छव, नील-पावडर दियोड़ो घोसी-ब्रासलेट, कड़प दियोड़ो ऊजळो हुपट्टो घर घूँघदार जूती बा रो धरेस हो । ये नामो सेठ रायचंद जी रा मुनीम ह्य । सेठ रै सूत रो धंधो हो भर सगै ई खंधी-किस्ती रो काम ई चालतो ।

मुनीमजी सगळी बातयां सूं जाणकार रैवता । एक बार सेठ रै रसोइयै पगार बधावण री बात कैई । सेठ मुनीमजी री तरफ देखियो । मुनीमजी समझ्या भर भट कैयो—“ठीक है महाराज ! पगार बधावण री आपरी बात बाजय है । पांच रुपिया आज सूं बधिया समझो, पण एक बात आ हुसी कै आज सूं बाजार सूं चीज-बस्त लावण रो काम दूसरै रै जिम्मे लागसी । धारै सगै ई घणो ई काम है ।”

आ गुण'र रसोइयो ताकण लाग्यो भर धीमे सीक कैयो—“खैर भला, तो पगार हणै बधावणी नई सरो । चलै ज्यों ई चलण देवो ।”

एक दर्फ सेठ खर्च लिखावण नै पानो दियो । रोकड़िये पुरजो देखियो  
अर कई कै एक छड़ी रा च्यार रुपिया । इसी छड़ी तो हूं वारै आना मे  
लायो हो ।

मुनीमजी समझ्या । वां उचळो दियो—“आंरी खातरदारी दूकान-  
दार काई करी ? भूहान सरवत पायो, पान खवायो अर जी-जी करी । तेल  
तो तिना मांय सू ई नोसरै है अर पर्दमा तो चैरै रा लागै ।”

“जणै तो च्यार रुपिया बाजिब ई है । मूंडा देखैर तो दोका  
काढीजिया ई करै है ।”

मौकै ऊपर उकलै जिकी ई उक्त । नई तो “मोको बूकी डूमणी  
गावै ताल-वेताल ।” मुनीमजी रो उक्त ई इण वास्तै एक दर्फ सेठजी रो  
इज्जत राखली । वै दिन सेठ यात्रा मे गयोडा हा । दूकान रै नाव रो हुडी,  
तीस हजार रो आई । रुपिया इत्ता रोकड़ी पोतै नई । बक, बढ हुयग्यो  
हो । रोकड़िये हुडी देखी अर मुनीम रै कानी देखियो । मुनीमजी हेठै गया,  
तळमंवरै में । उठै सरदी मिटावण नै सिगडी मंगायैर-तापण लाग्या ।  
रोकड़ियो हुडी लेयैर आसामी सागै हेठै गयो । मुनीमजी हुण्डी लेयैर पडण  
लाग्या । वा कैयो कै आज तो ठड बहुत है । हाथ-पग घूजै । पण आपरी  
हुण्डी हणै सिकर जासी । इया कैवता वा रा हाथ जोर सू घूजण लाग्या ।  
वा रोकड़िये नै हुण्डी देवण नै हाथ बघायो कै हुण्डी हाथ सू छूटगी अर  
बोरसी मे आहूती लागगी । वै आसामी रो मूंडो पिलको हुयग्यो । वां  
कैवण लाग्यो—“अ... र... र... र !”

“अ... र... र... र... काई? आपने काई चिन्त्या है । मै तो आरा-  
कारा है । सऊकारी बात आप जानो हो । पैठ मंगवाय लो । च्यार  
दिना मे आय जाभी । रुपिया आपरा असल है, अखरै-अखरै मिळसी ।”

“ठीक सा, ठीक ! आ कैयैर वो आसामी उठै सू रवानै हुयग्यो अर  
मुनीमजी रो इण उक्त नै सै जणा दाद देवण लाग्या । मेठ नै जद इण  
बात रो ठा लागी, जद वै मुनीमजी नै आपरै कारबार मे दोय आना हिस्सै  
रा पातोदार बणाय लिया ।

## कुड़छी कलक

मूळजी रमोइया हा, पण वै आपन कुड़छी कलक कंवता । वां घणी सी जिन्दगी सेठ नरथंजी रै अठै ई गुजारी । मेठ रो सभाव आछो हो, पण सेठानी डेड सैणी ही ।

मूळजी नै शुरू-शुरू मे घणो छटणी पड़ियो घर सेठानी री हकूमत ई सैयणी पड़ी, पण पंछे तो वै उण रै माथे बाघण जिसा हुयम्मा । मूळजी सेठ साधे बंधई गया, पैला रै जमाने मे । दिनू नै वा दियासलाई री पेटी भांगी जद सेठानी पेटी देवता थका कैयो कै—एक महीनै साई इण नै चलावणी है, साठ काठी है इण मे । वा हामळ भरली, पर मन मे गुळगाठ बांधली ।

तीसरै दिन ई वै सेठानी नै कैवण लाग्या—“धी लेवो मसालो घिसीयोड़ी, काठघा अर दूसरी पेटी देवो । सील सू सूल्या जगै ई कोनी ।”

सेठानी नूंघी पेटी देवण नै त्पार नईं हुई, इण वास्तै मूळजी पाडोस भाळै ढाधै में गया अर-उठै सूँ एक हांडी मे खीरा घाळ'र डोरी सूँ वै नै बांध'र आपरी बाड़ी मे आया । उठै सेठ खड़ो हो । वै मूळजी नै कैयो कै इया काईं करो ? जद मूळजी सगळी बात बताय दी । सेठ ऊपर जाम'र सेठानी नै डाट बताई अर मूळजी नै एक रुपियो दियो, पेटघा खातर ।

□ □

सियाळी रा दिन हा । सेठ मूळजी रै गरम कोट करावण रो बात कैयो, पण सेठाणी बीच में ई भचको घाळण नै कैयो—“तारल वरत भाळो कोट ई पड़ियो है । इयां नै किसो भचार घाळणो है ?”

मूळजी चुप रिया, पण वै दिन, रात नै रसोई बणाय'र निबिता हुया । सेठ रात नै मोड़ो धाया करतो, सट्टो बन्द कराय'र । वै दिन वो धायो भर मूळजी उठिया । उठत ई सेठ डरग्यो भर बोकियो—“धोव मा “ य ए ।”

“डरो ना सेठा, ओ तो हूं मूळियो हूं, मूळियो !”

“इया किया ? उधाड़ो शरीर, राख लगायोड़ी भर . गमछो बांधियोडो । बात काई है ?”

“कोई बात कोनी । सो लागियो, इण वास्ती केई देर तो तपतो रियो भर जद खीरा बुझ्या जणै शरीर रै राख लगायसी, गरमास लेवण नै । म्है सोच्यो कै साधु राख लगाय'र सियाळो काळ देवै तो आपां ई देखा तो सही ।”

सेठ समझ्यो कै—मूळजी रै कोट गरम नईं करावणै—सूँ भा बात हुई है । दूसरै दिन ई, इण वास्ती बां रै कोट रो नाप दिरीज्यो ।

सेठ-सेठाणी सैर धाया । मूळजी ई सागै हा । सैर मे मूळजी नै दूध लावणो पड़तो । वै भैस रो दूध लावता भर रस्तै मे कंई पीय'र वै में पाणी मिलाय'र ले आवता । एक दिन सेठाणी दूध छाणियो, जिकै में एक पाणी रो जीव आयग्यो । सेठाणी नै इचरज हुयो, पण मूळजी बात सारी कै—दूध आळो बापड़ो गरीब आदमी है, ओखो पाणी गायां, नै पाय सकै नईं, इण वास्ती गाय कठई असोळाई तळाई में मूंडो घाळ लियो हुवैला ।” भा कैय'र वै आपरै घन्वै लाग्य्या ।

एक बार मूळजी नै सेठाणी पूछियो कै—“एक सेर दाळ रै सीरै मे केशर किस्ती चाइजसी ?”

“एक भरी ।”

“एक भरी कांय में लागसी ?” इचरज सूं सेठाणी पूछियो ।

“लगसी जित्ती लगसी, बाकी रो आडबर कहसी ।” ओ उधळो दियो, मूळजी ।

मूळजी मोकळमंवा हा । एक दफे सेठाणी रै मामे रो सालो आयो । वै आपरो आपो दियो घर कैयो कै ओ तो आपरै नानाणे कने ई तो रैवै है ।

“पण हूं तो नईं जाणूं इया नै ।”

“आप म्हनै जाणों नईं ? हूं कावजी रो बेटो हूं ।” वै कैयो ।

“हुवैला बन्ना ! म्है तो कावजी रो आगणो तक कदैई नईं देखियो, म्हनै काईं ठा”- ओ उधळो मूळजी दियो ।

एक दफे मूलजी रै पाहोसी रै बेटे रो ब्यांव हो, इण वास्तै गळी मे जलसो सभियो । गळी आळां रै घरा मे पेचा घर गुड फिरियो । घर दीठ एक-एक रुपियो ई दिरोजियो, पण मूलजी रै अठै कंईं नईं पौचियो । खैर ना ! सिध्या नै सेठ रै घर आगे तवायफ रो प्रोपाम हो । लोग भेळा हुमोडा हा । बिजळी री जगमगाहट हुग रैई ही । इत्तै मे तोया री नजर ऊपर गई, भाड रै कने-हालण आळै लानटेण कने । सेठ ई ऊपर देखियो घर कैयो-“अठै कुण मूरख है ? काईं चांदणी री कमी है, अठै ?”

“हां-हां, है ! घोर अंधारो है, अठै । दिवै तळै अंधारो ई रैवै ! नईं तो म्हारे अठै गाड़ो अर रुपियो पेचै समेत कयो नईं पौचतो ?”

सेठ वा नै बुलाय'र आपरी गलती मानी अर दिनूंनै ई वा रै अठै मुनीम सगळो रकीणो पूगतो कर दियो ।

मूलजी रै छोरी रो ब्यांव हुयो । जान जीम'र गई । जानप्रा घणी भी जीम ली हो, पण गीत गावंती-गावंती फेर कवा मटकाय रैई हो । चीज बघण लागी । मूलजी देखियो कै आज तो इज्जत जायो, इण

वास्ते जोर सून भापरै वेटे नै कैंयो—“घरे भाइया ! मीठे भाला घामा  
 गिण'र राखे । श्री चोर नई ले जावै । म्हारी जाण में—इयां गूंजा तो मीठे  
 सून भर लियाई हूँसी ।” आ मुण'र जानण्यां खळखळ चळू कर लियो ।  
 इयां वां री लाज रैयगी ।

## बाबू साहब

सेठ चुन्नीलालजी ने लोग बाबू साहब के नाव मूँ भोळखता हा । वे बडा भादमी गिणी-जता, पण हा भोळा । राजाजी के घठे वाली धणी चालती । चंदो भरण ने वे सगळो मूँ तोखा रैवता । वे रईस प्रकृति रा जीव हा । हर टेम पांच-सात जणां वाली हाजरी में हाजर रैवता । केई जणा ने वे पोखता ई हा । गरीब-गुरवा ने ई खाली नई जावण देवता । वे कैवता के—“ठागवे जिको ई ठाकर हुवे ।”

बाबू साहब एक बार कळकत्त गया । उठे वे घूमण ने निकळिया । रास्तै मे पिशाब रे हाजत हुई । वां एक जागा बैठे र पिशाब करियो । बिस्ते में ई पुलिस धाळां वाने पकड़ लिया । कने ई धाणो हो, जठे लेयग्या । मजिस्ट्रेट साहब बैठा हा । वा रे सामने बाबू साहब ने पेश करिया । वा, जणा ने पूछियो—“कयो जी ! पेशाब किया ?”

“हां, हुजूर करियो ।”

“तो दो रुपय जुर्माना । जुर्माना जमा न कराने पर ता बर्खास्तगी भदालत सजा ।”

सजा रो नाब मत मो सरकार ! कैद रो नाब ई खोटो । थूको धारे मूँ डे मांयसूँ । आ कैय रे मुनीम ने कैयो—“मुनीमजी हाकम साहब बडा दयालु है, बहुत कम जुर्मानो कियो है । आपां रा बीस रुपिया जमा कराय रे रसीद लेय लेवो । काई ठा, कने फेर हाजत हुय जावे । दस दफे रो तो पिण्ड छूटे ।”



धा चात मुण'र सगळा उणां रै भू'डें कानी देरण लाग्या ।

बाबू साहय बीमारी-सीमारी भू' डरता । वै वैदराजजी नै निरोग रैवण रो उपाय पूछता रैवता । मूक बार वैदराजजी कँयो कँ हवा लावण नै दरवाजै रै बार जाया करो । दूसरें दिन वै बैगा उठ'र दरवाजै बार गया । फाटक पार करता ई बाको फाड'र जोर जोर भू' हाव'""हा व"" करण लाग्या । मुनीम देस'र हाको बाको रैयग्यो । एण वो समझयो कै सेठ हवा खावै है ।

एक दफै मुनीम कँयो कँ कालै निरजळा इम्पारस है, काई' न काई सेवा ले धावा देवा-लेवी नै ।

"देवा-लेवी भती करिया, जमानै रो ध्यान राख्या करो । देवा-लेवी पछै काई' हुयै ?"

बाबू साहय मौकै-टोकै इसो तक'र तीर मारता कै पूछो उयळो दिरीजणो मुश्कल हुय जावतो । एक दफै री बात है कै उणा री बिरादरी रा लोग गोपालजी रै मिंदर मे भेळा हुया । वै सगळा ई 'बारियो' बन्द करणो चावता हा । सगळा आप-आप री राय दी । बात तै हुवण भाली ही, उण वक्त ई बाबू माहव आपरै भाई नै कँयो—"आ सभा किण बात री हुय रही है ? म्हारै तो हाल-साणी ओ रामकयाणो समझ मे ई नई' आयो ?"

'बारिये' नै बन्द करण खातर- ओ उयळो बां रै भाई दियो ।

"तो चाखो आपां अठै सू । ना तो 'बारियो' करणो आपां शुरू करियो भर ना आपां बन्द करण री राय मे हा । हाफै पईसा खूटियो बन्द हुय जासी । म्हानै जुडियो तो म्हानै प्यार मिठायां भर भू'ग-चावळ करिया भर ऊषाववों घी सामे । भर आज जे गुड री लाफसी ई नई' जुडसी तो कठै सू करसां ?" धा कँय'र वै भट्ट उठ'र आपरै भाई सागै धारै नीसरग्या । सै जणा देखता ई रैयग्या ।

बाबू साहब ने मोनरेरी मजिस्ट्रेट बनाया, खुश हुय'र राजाजी ।  
वे कचेड़ी में बैठिया, जाय'र । लोग बां ने 'अनाही मजिस्ट्रेट' समझता हा ।

एक दफे पुलिस आळां एक मुलजिम ने पेन करियो । बाबू साहब  
वे ने देखतां ई खुसी सूं उठ'र वे ने आपरे बराबर खुसी ऊपर बैठायो ।  
इण कारण कोर्टजी कैयो—“साय, अ तो मुळजम है ।”

“मुलजम ? म्हारे जीवतां अ मुळजम ? अ तो म्हारा मालक है ।  
सिरदार-मगा है । काई ईयां मिनल भारियो है ?”

“मिनल तो नई भारियो, पण सट्टे र केस रा मुळजम है ।”

“तो सट्टो कारणो काई जुलम है ? सऊकार रा वेटा है, धन सूं  
पन लडावै । ऊंदर रो जायोड़ो जे बिल नई खोदे तो काई करै ? अ  
चांदी रो फाटकी नई करसी तो काई कचोळ्यां बेचसी ?” आ कैय'र  
मुकदम ने खारिज करणै रो हुकम सुणायो ।

एक दफे बां कने एक सिफारस आई । उणां कैयो कै म्हने ईयां तो  
याद नई रैवै, नाम-पत्ता । इण वास्ते तारीख आळै दिन थे डावे कानी  
आय'र खड़ा हुय जाया । बस, आ बात याद राखिया ।

तारीख आळै दिन थो मिनल कचेड़ी में बाबू साहब रै डावे पास  
जाय'र खडो हुयग्यो । बाबू साहब दूसरी पार्टी आळा ने बुलाया अर हुकम  
दियो कै डावो जीतियो, जीवणो हारियो । पेशकार बां कानी देखण  
लाग्यो, जद बां डाट बताई अर फैसलो लिखाम'र डावे आळै ने जीताय  
दियो ।

बाबू साहब कने एक दफे एक जणो गयो अर भूं-भूं रोवण लाग्यो ।  
या उण ने पूछियो—“रोवे क्यों है, काळिया ?”

“म्हारी चोकी पुराणी है अर काल खोदाइज जासी । काल मूनसबोड  
आळा नैजवा साहब मीको देखण आसी । आप ई मैबर हो, इण खातर  
आप भी पधारसो । हूं गरीब आदमी हूं । म्हारे तो आपरो ई आसरो है ।”

“ठीक है तो । काल म्हे मौकी देखण आसां । यूँ हाजर लाधे उठे ।”

दूसरे दिन नैजवा साहब सांगे बाबू साहब ई मौकी देखण पाँचिया । नैजवा साहब रे वोळण सूँ पैलां ई बे उण चौकी ऊपर खडा हुयग्या अर केवण लाग्या—“सा’ब ! इण चौकी ऊपर काळिये री दादी बेठी रेवती । बे रे घोळी दाढी ही । म्हे सगळा छोरा बे ने डाकण-डाकण कैय’र चिगावता अर बा गाळ्यां काढती । बा इयँ काळिये री दादी ही दादी । अर साठां सूँ ऊपर तो म्हे ई जावण लाग्या ।”

आ सुण’र नैजवा साहब समझग्या अर चौकी वदस्तूर रालण रो हुकम देय दियो ।

बारा हसा केई किस्सा मुलक में फैलग्या । इण वास्तै एक एक राजाजी बा मै बुलाया अर कैयो कै बाबू साहब, आप तो केई दुबळा हुयग्या । शायद कचेड़ी री दिक्कत घणी रेवै । आप री मर्जी हुवै तो भवै आप केई दिन आराम कर लो । बा भट्ट हुंकारो भर लियो ।

## घाड़ैती

मोकला बरस पैला ठाकर शिवरामसिध नांमीं घाड़ैती हा, पण कानून री लपेट मे कदैई नईं आया । घाड़ै री टैम, वै केई-न-केई सेठ-सऊकार रै अठै हूषण री सफाई दराय देवता भर घाड़ो ई आपरै राज सूं दूर पड़ावता । वा री मुलाकात बड़ा-बड़ा सेठ-सऊकारां सूं हो । केई घरां में वां री आव-जाव हो भर वा घरां मे वै घरूपणै री संबंध राखता । वै हा ई अलमरत ।

एक समै री बात है कै वै सेठा रै दिवानखानै मे बैठा, गुलछरी रागाय रिया हा । एक जर्ण बारी उमर पूछी । वां बीस बरस बताई । वै पूछण भालै इचरज सूं कैयो—“बीस बरस ?”

“हा—हां, बीस बरस । म्हे एक दफै मारै जिस रै सामनै म्हांरी उमर बीस बरस बतायदी, इण वास्तै अरै जलम भर बीस बरस ई बतावणा पडसी । कारण कै ‘मर्दा री जवान एक हुवै ।’ खैर वै समै म्हांरी उमर ई हसी हो ।”

इतैं में ई रामूसा भिचकी लगार्ई—“ठाकरां थे कांईं घाड़ो मारो ? धनको दियां तो पढ़ जावो ।”

“नईं महाराज, म्हांनै तो लोग इयांई बदनामी देवै । आप ई देख तो कै म्हे कांईं घाड़ा मार सकां ?”

रामूसा आ बात इण वास्तै कैयी कै ठाकर लांवा हा । वै दोखण

में पतझा सागता । कमूँबत रंग रो या धूनटी रँ रंग रो साफो, कोट  
 घर पोती बाँरी गोमास हो । ये देगी पगरगी बरता । रंग बाँरो गोरो  
 हो ।

रामूमा आळी बात बारावाँ में घाई-गई हुयमी । पांच-भात दिन बाद  
 रामूमा नेठ री बग्गी में बँठ'र ये री बेटी रा गंगा देवण नै जायना हा ।  
 मिथ्या पढी हो । ये हवेनी मूँ घोड़ी दूर ई पोँचा हुयमा कँ सामनँ  
 एक धुमवार घाय'र दाकल दी—“घरे घो ! घारँ बनें त्रिगी चीजाँ है,  
 ये झारँ हयाने कर दे, नई तो नग बाकूँ ।”

रामूमा नामँ देगियो नो नागी तलवार हाथ में नियोहो, जमराज  
 जिसो एक घाटे आळो घाईंती दीतियो । ये धूकन मारया । बग्गी रँ  
 कोपयान री ई मिथी बघनी । रामूमा गिड़गिड़ाया, पण घावर मर  
 मार'र गंगाँ आळी पेटी देवणी ई पड़ी । काई करता नई तो, कारण कँ  
 लूँटे रो ओको हाग नै फाई ।

पेटी सेव'र वो घाईंती परो गयो घर बग्गी पूठी हवेनी पौनी ।  
 सेठा घणो सोच कगियो । सैर में ई बूको फूटग्यो ।

दूसरँ दिन ठाकर घाया । नेठ बा बात टोरी घर रामूमा गिड़-  
 गिड़ाव'र कैयो—“ठाकर माह्व ! हू तो हुयग्यो काळी पार । झूने रपिया  
 भरणा पड़गी ।”

“कुण हो ? कितो'क हो ? आप कोई झनाण-सैनाण बतावो, जद  
 तो कईं टा ई लगावाँ ।”

“काई बताऊ ठाकराँ ? ” एक श्री डील-डील आळो पाडवी हो ।  
 घोई ऊपर बैठे-बैठे ई दाकल लगाई । हाथ मे नागी तलवार हो । आ तो  
 नस भर श्री बडी-बडी लाल आँख्या । बडो डरावणी हो । हूँ तो पूरी नजर  
 ई मिलाव सकियो कोनो ।”

“आप ई डरग्या ? देवणी ही नो बाप री ! आ तो आपरें घर सूँ  
 थोड़ी दूर री ई बात है । इसा सिधा री गुफा मे स्वाळिया किया  
 बहग्या ?”

“स्याळिया नईं ठाकरां, वो तो सिध सूं ई घणो खतरनाक हो । भवै तो आप संकट काटसो जद ई कटसी, नईं तो म्हनै तो कूबो-खाड करणी पडसी ।” आ कैय’र वै ठाकरा रै पगां खानी बघिया, पण ठाकरां वां नै उठाय’र छाती रै लगाया अर ताळी बजाई । इत्त में ई बारै सूं एक जणो वा यैणां आळी पेटी लेय’र दिनानखाने मे बढियो । पेटी देखता ई रामूसा हरा हुयग्या । वै ठाकरा रा गुण गावण लाग्या । पण ठाकरां कैई कै महाराज ! म्हनै घणो दुख है कै आपनै कष्ट हुयो, म्हारै कारण । आ कैय’र खिलखिलावण लाग्या । कनै ऊभा जिका लोग भी हसन लाग्या ।

शिवरामसिध दयालु हा । एक दफै वै एक भू पडै रै भागी सूं जाय रैया हा कै वै मे एक डोकरी नै रोवती देखी । वै, वै कनै गया अर रोवण रो कारण पूछियो । वा बोली—“काईं बताऊं वेटा ? हूं तो म्हारै दिनां नै गोता देवती, म्हारै बिचै रा दिन काटती ही कै आज दिनू गै सूं घडी एक पैला शिवरामसिध म्हारी मगळी पूंजी खोस लेयग्यो । म्हारा चादी रा कड़ला अर सोनै रा टड्डा वो लेय’र बुबो गयो । कठै पिण्ड छुड़ासी वो हंयां कीड़घा छमक’र ।”

“यनै काईं ठा, कै वो शिवरामसिध हो ?”

“वो कैयग्यो जावतो कै जे रोळो-रप्यो कियो तो ज्यान सूं मार न्हाखूंलो, म्हारो नाव शिवरामसिध है ।”

आ यात सुण’र ठाकर कैयो कै रो मत माई ! हूं थारी चीजा लाय देईम ।

“अरे बप्पा ! यूं मोत रै नैडो मती जायेना । वो आपरा किया हाफै ई पाय लेसी ।”

पण ठाकर उठै नईं रुकिया । वै आपरै साध्यां नै लेय’र वै चोर नै भट पकड़ लाया अर वै नै बाँव’र डोकरी रै पगां मे लाय फेंकियो । डोकरी रो रकम्या पूठी दिरोजी अर वै नै जद ई मोनियो जद डोकरी वै नै माफी देय दी । वा साचै शिवरामसिध नै घोळव’र गद्गद् हुयगो अर भासीसां री भडो लगाय दी ।

एक दफे एक घाड़ो गड़ियो-सेठ-सऊगरां रै काफले नै लूंटियो । वं समै रेला-मोटरां नई चालती । लोग साथ-संघ मे यात्रा करता । सवारी रै रूप मे बैल्यां रो चल्लो हो । वो सघ ई बैल्या ऊपर जाय रैयो हो । वा नै जगल मे लूंटिया हा । वां रै माल री गांठड़्या बंध चुकी ही । इत्त मे ई वां रो सरदार आय पौच्यो । माल देख'र वो घणो राजी हुयो । वो प्रागै बधियो । देखे तो मिनख-लुगाया, डर सून कापे । लुगाया एक तरफ लडी ही, धू धटा काढियोड़ी । करे तो काईं करे, इमी टैम ?

सरदार विचारां मे डूबयोडो कोई दोय-एक कदम प्रागै बधियो हुवैमा कै वै रै काना रै पडदै सून एक आवाज टकराई-“सिवराम काको है काईं ?” आ सुणतां ई वै सामै देखियो । देखे तो वै रै पगा हेठै सून जमी खिसकनी । वै हकियोडै कण्ठ सून कैयो-“लिखमा ! !”

वम, फेर सरदार रै गळै सून बोल को निसरियो नी । वै रै आख्या रा आसून, मन री बात बतावता हा ।

आखर मे केई तरै सून सरदार बोलियो-“म्हने माफ करदे, वेटा ! तू पैला क्यों नई बोली ?” फेर लिखमा रै भायै हाथ फेर'र एक सौ एक रुपिया आपरै कनै सून देय'र सगळो सामान वै संघ रो आना-पाई समेत पूठो दिरायो । वै वा नै काफी दूर तक पींचाय'र भी आया ।

लिखमा वै ई सेठ री बेटी ही जिको रै अठै जणां री आव-जाव ही । जिका नै वै भायां सून ई बेसी समझता हा । लिखमा वा रै हार्या मे ई बडी हुई ही ।

सरदार रै साध्या नै वा रो आख्या मे आसून देख'र प्रचम्भो हुयो । वा पैली बार, ठाकर री आख्या मे आसून देखिया हा ।

## पिंडतजी

होलजी नै जाणकार लोग पिंडतजी रै रूप में जाणै । वैं इत्तो काम करै के जिकै नै देख'र इचरज हुबै । वैं कैया करै के—“म्है पिंडत ते ई हुंकारै रा, सासर-पीहरै रा, हामजी-कामजी रा । काम रो काई छोटो घर काई मोटो ? पोहटो पढ़ै तो घूड लेय'र उठै । म्है सेर री ई दूवां घर पाव री भी नई छोडां ।”

होलजी भा बात ई कैया करता के म्हें दो काम छोडिया है—ऊँच में रसोई घर नीच में जाजरु भाड़नो । रसोई बनावणी धावै नही, घर जाजरु भाड़नो कैणई भोळायो नही ।

पिंडतजी १७-१८ बरसां रा हा, जद एक बार गांव में फेरा करा-वण नै गया । नूँवा भोदा हा, जिकै सूं आठ फेरा दिराय दिया । लुगाया एतराज कियो, जद पिंडतजी नै ख्याल पड़ी, आपरी गसती । पण वैं किसा भटकै मात खावण आळा हा । भट कैयो—“चार फेरा नियम रा घर चार छोरी रो मंगल करडो है जिकै रा ।” बात सरणी ।

एक बार पिंडतजी कुसालजी सेठ रै बेटे रै ब्याव मे गया । सेठ कैयो—“पिंडतजी, उठै भात भती खाय जाया ना । आपरी घाक नही गुमै । उठै कासी रा पिंडत धावैला ।”

पिंडतजी कैयो आप बेफिकर रैवो ।

बरात हुंकी । फेरा री टैम हुई । कासी रा पिंडत पोय्या खोल'र



बैठा । होलजी भी आपरो पतरो गोनिवो घर जोर-जोर सूनं माहुत्यां तगावण लाग्या—“उणउणियायें स्वाहा, गुणगुणियायें स्वाहा, मुणमुणियायें स्वाहा, कुणकुणियायें स्वाहा, गुणगुणियायें स्वाहा ।” पिडत चकराया । इण माहुत्यां घर देवतावां सूनं चं धनजाण हा । वें समझिया कै पिडतजी आपां सूनं हसियार है । पिडतजी रो बात सरगो । पिडतां होलजी रो आदर कियो । वां होलजी नें माहुत्यां रें विषय में पूछियो जद पिडतजी या सूनं यघन ले लिया कै केई रें ई भागै इण बात रो चरचा करोला नही । जद पिडता बाचा दे दिया, जणै होलजी वां नें एकागत में लेयाया घर आपरो पेट उपाड'र कैयो—“ए माहुत्यां तो उदर-वेद रो है । हूं तो आपरी काईं बराबरी कर सकूं ? इण वास्तं छै माहुत्यां पेट-भरण खातर बणायोड़ी है ।”

होलजी साहूकारां रें पाठ-पूजा ई कर देवता घर मोकै-टोकै, सगाई रो टेम-टेवो भी मिलावता । एक बार सेठ दाऊजी रें पोत रो सगाई रें खातर सेठ चूनजी रो बेटी रो टेवो आयो । दाऊजी पिडतजी नें सुबह रो टेम, टेवो मिलावण रो बात कैई । पिडतजी कैयो—“सिझ्या मुहुतं चोलो है, सो मिलासा ।” सेठ कैयो—“हुवा ।”

होलजी थोड़ी देर बाद चूनजी रो हवेली रें भागै सूनं बिया । चूनजी देख'र हेसो करनै, घर में बुलाया । होलजी घर में गया । बात-चीत कर'र सेठ, टेवो मिलावण रो बात चलाई घर कैयो—“महाराज, आपरी सेवा हूं कर दीम, थोड़ी ध्यान सूनं टेवो मिलाया । छै टावर आपरा ई है ।”

“ठीक है, पण हूं होलजी बाजू । म्हारी सेवा इक्यावन रुपिया घर एक घोती जोड' सूनं हुवैली ।”

“वाह महाराज ! इक्यावन नही, रुपिया इग्यारह आपरी भेट घर देनूं । दया बात तो पक्की हुयोडी ई है ।”

“तो फेरूं टेवो मिलीयो ई है ।” आ बात सुणाय'र होलजी आपरें घरें गया । सिझ्या नें वें सेठ दाऊजी रो हवेली गया । वें आसण तगाय'र

बैठिया घर टेवो देखण लाग्या । “छोरी तो बड़ी भागसाली है, बहुत फलसी फूलसी । आपां रै लायक है मा सा पण !”

“पण ? पण काई ?”

“नहीं—नहीं, सब ठीक है ।”

“नही—नही, साफ-साफ कैवो ।”

“मा सा । काई कैऊं ? एक ऐब छोरी में हुसी—कै वा घोड़ी मिन-खोकड़ हुमी । पण इयें बात रो घ्यान नईं राखणो, मगाई जरूर करसां । परांनै रो टावर पड़ियो कठै है ?”

“नही—मा मगाई हुय नहीं सकै ।” भा बात सेठानी कैई घर टेवो पाछो सेठ धुनजी रै पहुंचग्यो ।

एक बार पिढतजी एक सेठानी रै घठै केई फल पड़िया देखिया घर कैयो—“सेठानीजी, ए काकड़िया हजै गरमी मे कठै सूं भायग्या ?”

“काकड़िया कोनी, घै आबा है ।”

“आबा ? इत्ता बड़ा—ऐ हुवै काईं आबा ?”

“हाँ—हाँ, आपरै ब्यायोड़ा कोनी कदैई ?”

“म्हारै भाग में आबा छोड़'र काकड़िया ई लिखियोड़ा कोनी ।”

भा सुण'र सेठानी होय आबा पिढतजी नै दिया । वै आपरी तरकीब मे सफल हुया घर हंसता-हंसता घरे गया ।

एक दफै सेठ मानकलालजी आपरी भां रा अस्त लेय'र पिढतजी नै हरिद्वार भेजिया, कारण कै छोरे रो ब्याव हो जिकै सूं अस्त रैवणा ठीक नईं हा, घर मे । पिढतजी रै काई जची कै एक दिन दिल्ली में रैय'र दिल्ली मे ईज अस्त पधराय'र पूठा बीकानेर भायग्या । सेठ . घणो राजी हुयो कै अस्त ठंडै पाणी पधराईजग्या ।

दूसरै दिन सेठ नै सुपनो हुयो । वै पिढतजी नै बुलाय'र कैयो—  
“महाराज, आप अस्त हरिद्वार मे नही पधराया ?”

“कुण कैवै ?”

“कैय कुण ? खुद म्हारी मां म्हनै कैयो कै अस्त तो दिल्ली में ई पधराय दिया ।”

“बिल्कुल भूठ, कत्तई भूठ बोलै है थारी मा ।”

“म्हारी मा तो बहुत करुड़ है । आप भूठ बोलो ।”

“हूँ भूठ बोलूँ या थारी मां, इण रो निरणय तो अक्ल सूँ ई कर कै थारी मां साची हुवती अर म्हे जे अस्त हरिद्वार में नई पधरायँर दिल्ली में पधराया हुवंता तो बीकानेर आयँर यनै क्यों कैवती, वा पाधरो हरिद्वार ई जावंती । इतो तो हियों फोड़ँर वा सोचती कै दिल्ली सूँ बीकानेर नैड़ो है वा हरिद्वार ।” आ कैयँर होलजी उठै सूँ खाना हुयग्या ।

एक बार पिंडतजी फरसै जी रो तरफ सूँ एक दीवानी मुकदमै मे गवाई देवण खातर अदालत में गया । हाकम नांव-पता पूछँर कैयो-“कहो नियम-धर्म से सच-सच कहूंगा ।” पिंडतजी कैयो-“हां, सच-सच कैसूँ, नेम-धर्म सूँ ।” अर मन-मन में कैयो-कूड़ कूड़ सौगन ली है-कूव ऊपर कूकड़ी-म्हारी सौगन ऊतरी । खैर, गवाह शुरू हुवण लागी, जद दूलजी कैयो-‘हाकम साब, हूँ तो फरसैजी रो गवाई हूँ । इणाँ रै फायदो हुवै जिसे बात लिखलो । आपनै तो न्याय करणो है ।’

आ सुणँर हाकम साहब बीच मे ई वां नै टोक दिया अर फरसैजी रै वकील रै कैवण सूँ कै गवाह पागल प्रतीत होजा है- इत्यादि, मुश्किल सूँ पिंड छोड़ियो, इण वास्ती व कोट-कचड़ी रै नाव सूँ डरता, ‘भोळ बामण भेड़ खाई, फेर खावे तो राम दुहाई’ कैवता आपरै धरै गया । फेरुं कदैई गवाई देवण रो नाव ई नई लियो ।

## वकील साहब

“वाक्जाळ सून कीलै, जिको वकील” भा परिभाषा वकील राम-परसादजी री धणायोड़ी है । वै मवकिल्ल सून पईसा निकलावण में बहुत हुसियार है । वै कैया करै कं म्हनै भा ठा रैवै कं ओ मवकिल्ल म्हनै वकील करसी, वा नही, किता पईसा देसी इत्यादि । वै नीची-नीची अचकन भर चूड़ीदार पायजामो पैर'र कचैड़ी आया करै है ।

रामपरसादजी नै इयां तो सात भो दीखै पण इयै भो में आंख्यां बहुत कमजोर है, इण वास्तै भोटो काळो चश्मो हर टैम लगायोड़ी राखै । वै आपरै मवकिल्ल री तरफदारी करण में कीं कसर नही छोड़ै । एक बार एक मुकदमै में बैस करणी शुरू करण सून पैली ई वा जज साहब नै कैयो—“सरकार एक अर्ज है कं बैस सुणण सून पैली मुचळका हुय जावणा चाहिजै ।”

“मुचळका ? कैरा” जज साहब इचरजं सून पूछियो ।

“खिलाफ पार्टी रै वकील साहब रा । कारण कै म्है तो कानूनी पैरवी करण रो मैहनतानो ई लियो है भर इयां वकील साहब भरदामदी रो मैहनतानो ई सार्ग लियो है, इण वास्तै म्हनै शांति-भंग हुवण रो अदेमो है ।”

भा सुण'र खिलाफ पार्टी आळा वकील साहब गुंजण नै लाग्या ।

एक बार वकील साहब कनै एक मवकिल्ल आयो । वकील साहब वं री मिसल सेध'र अपील लिखाय दी । अपील मे चाळीस वजूहात लिखाया । घर चालीस रुपया मैहनताने रा मागिया ।

वै मवक्किल पच्चीस रुपिया देय'र कैयो-“वकील साहब हूं गरीब आदमी हूं। पच्चीस रुपियां में अपील आप लडाय देवो। फेर कर्नई कमर निकाल देईस।”

वकील साहब पच्चीस रुपिया जेव रें हवालै करतां घका कैयो-हूं किसो काणो, बाडो, लूलो-लंगड़ी हूं, जिको कसर निकाल देईस? म्हें मे तो कसर भगवान ई राखी कोनी, फेर तू' काई' कसर निकाल देईस?”

“वकील साहब पच्चीस” आ सुण'र वकील साहब वै अपील रें बालीस बजुहात मांय सू' लारला पन्द्र' पाइण्ट काट दिया। घर मुंशी नै फेर करण नै कागज दिया। इतैं मे ई वो मवक्किल कैवण नै लाग्यो-‘ओ नाई करो हो आप, ए लारला पन्द्र' पाइण्ट काट क्यो दिया।”

“हूं एक पाइण्ट रो बहस करण रो एक रुपियो लेऊं हूं। म्हें पच्चीस रुपियां आळी बैस करवावणी है इण वास्तं चाळीस पाइण्ट घोड़ा ई लिखीजसी?”

इत्ती सुण'र वै मवक्किल जेव सू' पन्द्र' रुपियां घोर निकाळ'र वकील साहब नै देय दिया।

पैला वकील साहब बड़ी-बड़ी मूछपां राखता। वै इयें मूछपा रो रोव नयै घर भोळें मवक्किल ऊपर भाड़ता। नयै मवक्किल नै कैवता-“देय म्हारै कित्ती बड़ी बड़ी मूछपां है? ..... घर हूं कर्नई नहीं हारियो, जद ई तो इत्ती बड़ी-बड़ी मूछपां है।”

“मूछपां रो हारण-जीतण मू' काई वास्तो?”

“वास्तो जियां नही। घनै टा नहीं है के हाकम री दराज मे एफ मिक्काज् ईयें घर जिको वकील हारै वै रो मूछपां हाकम बाट नैं। जिणें मू' ई देय म्हारै जिकी मूछपा कर्नई वकील रें नहीं है।”

वकील साहब घारै हारियोट' मवक्किल नै कर्नई को बंधें मी वै मू' लाग्यो। ई पैगमो मुण'र भट कयै-‘मैं म्हारो काम तो बगानो?”

1 मिक्काज-बैथी।

“कियां ?”

“हाकम तिस्रो कै थहारो मुकदमो बहुत पेचीदो है अर म्हारै समझ मे नही आयो, इण वास्तै ऊपर आळै हाकम नै गुणावो ।”

एक दिन एक मुकदमै मे वकील साहब तारीख मागी । जज साहब भट सूँ कैयो—“वकील साहब तारीख मै नहीं दूँगा । तारीख देने की पोधी मै पढ़ा हुआ नहीं हूँ ।”

“बिलकुल दुस्त करमावो हो आप । तारीख देवण री पोयी तो एल-एल० बी० मे पढाईजै है ।” वकील साहब उथळो दियो ।

जज साहब भेंपग्या, कारण कै वं तो बी० ए० ईज भणियोडा हा ।

एक दिन वकील साहब आपरै एक भायळै नै मजाक मे कैयो—  
“इण महिणै मे तो बहुत खर्च हुयग्यो ।”

“कियां ?”

“कई वताऊं ? एक हजार रुपिया कमाया कुल जिकै माय सूँ एक सौ रुपिया ई बचिया है म्हारै खनै तो ।”

“बस”

“और कई ? कारण ओ है कै एक सौ रुपिया तो पन्ने री माँ नै घर खर्च सारू देय दिया अर आठ सौ बैक मे फिक्सड डिपोजिट मे जमा कराय दिया ।

मितर हंसण लाग्यो ।

एक दिन वकील साहब रै एक भवक्कल मँहनतानो मांगणै पर गिडगिडाय'र कैयो—“हूँ आपरी गऊ हूँ वकील साहब, म्हारै ऊपर मँरबानी करो ।”

“नहीं-नही, बिना दूध देवण आळी गऊ नही चाहिजै म्हनै ।” ओ उथळो वकील साहब दियो ।

भाजकाल वकील साहब नै चिन्त्या घेरियोड़ी रैव । एक दिन म्हनै

---

1 पन्ने री माँ— आपरी घर्म पत्नी ।

कैवण लाग्या कै—“म्हारी लाइब्रेरी रो किताब्या रो कोई ग्राहक हुवें तो बताया ।”

“आपरी लाइब्रेरी रो ग्राहक ? ”म्हे इचरज सूं पूछियो ।

“और नही तो क्या ? इण किताब्यां रो जरूरत नही अब्बे म्हने ?”

“कयो, काई वकालत छोड़णी है ?”

छोड़णी नही, आलू करनी है नूवें सिरै सूं ।”

हूं इचरज सूं वा रै भूंडे रो तरफ देखण लाग्यो कै आखिर बात काई है । आखिर वै समझ्या, इण वास्तै मुस्करायर कैवण लाग्या—  
“वात आ है कै म्हने अब्बे किताब्यां बेचरै एक स्कूटर खरीदणी है, कयोके अब्बे कानून रो किताब्यां रो जाग्यां स्कूटर लेय ली है ।”

“कयो ?”

“कयो ?” इण वास्तै कै मुबह सूं ई बक्कर लगाय भाऊं स्कूटर ऊपर बैठेर । आ कैयेर वै चुप हयग्या ।

४

## सनजी

“सनियोजी घर मे है कोई”-ओ याक्य सुण’र सनजी कैयो-“वाळ धारै जीकारै नै, सूं कारो ई दिया कर ।”

सनजी रो मागी नांव हो, किसनचंदजी । वै घणा चोखा वैद हा । अंगरखी पैरता, पाण बांधता, हुपट्टो राखता भर ऊंची-ऊंची घोती पैरता । रंग साबळो, शरीर गठियोड़ो भर नाक तीखो । बोसी रा मीठा । हर टैम ख्यार, बुलावणियै रै-। हाथ में छड़ी कुत्ता सूं बचाव खातर ।

भाडा लोग बां नै वैदजी कैवता । जाणकार व्यासजी ई कैवता । एक वकै री बात है कै बा रै घरै एक जणो गयो घर पूछियो-“व्यासजी घर मे है कोई ?”

“व्यासजी तो मरग्या”-ओ उथळो घर मांय सूं दिरीजियो ।

“मरग्या ?”

“हा-हां, मरग्या ।”

वो पूठो फिरियो इत्तै मे ई व्यासजी दीसिया । वै सगळी बात बताई जद व्यासजी घर मे जाय’र पूछियो -“म्हारै मरण री बात कुण कैई ?”

“धारै मरण री बात ?” बा रा पिताजी बोलिया ।

“हा-हां, हूण हयै नै जबाब दियो नी, घर मांय सूं ।”

“पण वो जबाब धारै वास्ते थोड़ो ई हो ? वो तो ‘व्यासजी’ रै



यात हो । तूँ म्हारे गामने 'व्यासजी' धोड़ो हो गिणीजै । म्हारे वास्ते तो 'व्यासजी' म्हारा ककरोजी हा, जिम्मा परनोक गया । तूँ तो 'व्यासियों' है या 'सनियों' है, म्हारे वास्ते ।"

वै देवण लाग्या ।

बैदजी घर मे बढ़िया ई हा कै वां री घरभाळो बुझार मे पड़ी हो अर "भोय मां ए, भोय मा ए ! करतो रोवै । वै घर मे बढ़ता ई कैवण लाग्या—"भोय रामूजी, भोय सागूजी ! "

भा सुण'र वा री श्रीमतीजी उठ'र कैवण लागी —"म्हारी मां नै क्यूँ रोवो हो, जीयनी नै ?"

"हूँ तो थाने सहारो लगाऊँ । म्हें तो धारी बात नै ई दुसराई है । आपा दोनूँ जे सागै धारी मा नै याद करसा, जणै बुझार जहरी ठीक हुय ज्यादा ।"

वै केई रै ई बैसण जावता डरता । वै कैया करता कै—बैसण जावण भाळा रो वै घरभाळा ध्यान राखै कै हयां रै कोई मरसी, जद आपा नै ई बैसण हालणो है, हण वास्ते जपिया कुण बैठावै ?

## मास्टरजी

“रूपाल वै रै ऊपर ई ठूकै जिको आ समझ लै कै ओ रूपाल तो म्हारै ऊपर है।”

मास्टर दुर्गाप्रसादजी गजब रा आदमी है। काळा-कलूटा, पर वै आपरी हबसी जिसी सकल नै भी सुन्दर समझै। वै आपरी गिणती देस रै हूणै-गिणै साहित्यकारा मे करै है। हां, जद भी बात करै तो वै में विचत्तर प्रतिघात तो आपरी बढाई हुवै घर पन्चीस प्रतिघात केई न केई री निदघा।

जद वै मास्टर बण'र घरे गया घर मोड' मे बड़ता ईज चिल्लाया—  
“हूं बणग्यो हूं”, वो समै गाव री ठकराणी बँठी ही सो कैयो—“बणग्यो छै तो घर घाळा नै दोरी है, ब्हाला !”

“घर घाळा नै दोरी ?”

“हां-हा, बणीयो पछै तो मां नै खतरो है, पैसा ?”

“काई बात करो, माजी ? काई अरथ समझिया आप 'बणनै' री ?”

“बणग्यो री अरथ हूं समझी कै तू 'ढाकी' बणग्यो ?”

‘नही-नही हूं मास्टर बणग्यो, माजी।’

“तो धनी मुसी री बात है।” आ कैव'र माजी धनी आनित्यां दीयो।

मास्टर बणिया पछै, दुर्गाप्रसाद जी आपरी धाक जमावन री कोनीग बी। वै आपरी ई आपरी कैवता। दूधरै री मुलन री कोनीग ई

नहीं करता । इण वास्तु उणां रा जाणकार वां नै रेडियोजी<sup>1</sup> रै नांव सूं बतळावता ।

मास्टरजी मे ट्यूशन करणे री आदत है । जद वा नै दसवी-इग्यारवी रा छोरा खास-खास सवाल पूछै जद वै कैवै-हूं इम्पोरटेन्ट-सिम्पोरटेन्ट नही बताऊ । हूं तो पांच-सात सवाल ईज बताया करू हूं अर जिका पेपर में आवै । ओ चिड्या नै जाळ में फसावण रो तरीकी हो, मास्टरजी रो ।

मास्टरजी एक दर्फ आपरै सासरै गया । सासरै मे उणां री छोटी साळी घणी राजी हुयी । वा आपरो चूनी रगण खातर काळो रंग लावै ही । पण जद वै जीजाजी नै देखिया तो आपरी मां नै पीसा देयर धोली-“अवै रंग लावण री जरूरत नई” क्यूं कै जीजाजी रो हाथ पाणी मे फेराय लेसूं, जिकै सूं पाणी में रंग घोळण री जरूरत नही रैवै ।” मां-वेटी फेर खिल-खिलाय उठधा ।

मास्टरजी एक ईज स्कूल मे कई बरसां सूं है । वां रो ट्रांसफर हुय कोनी सकै । कारण कै मास्टरजी रै ऊपर इन्स्पेक्टर साहब प्रसन्न है । प्रसन्न हुवण रो कारण है कै एक बार इन्स्पेक्टर साहब री भैंस रो पाडो मरग्यो । पाडै बिना भैंस दुधावै कीकर ? मास्टरजी उठै ऊभा ईज हा । वै भैंस कनै गया अर भैंस वा नै चाटण लागी अर प्रावसगी । इण वास्तु इन्स्पेक्टर साहब सोचै कै मौकै-टीकै मास्टरजी सूं अड़ियोड़ो काम निसरसी इण वास्तु वा नै उठै ईज राखै ।

---

1 रेडियोजी रो तात्पर्य है- जिवो आपरो ई आपरो दर्जियो दळै, दूसरै री बात सुणै पण नही ।

## योगानन्दजी

कचेड़ी में भगवी अलफो पैरियोड़ा एक महाराज आया करता हा । रंग मुसकी, मूँडो गोळ, नाक लाम्बो, चैरो चितकतो, आंस्यां चमकदार भर शरीर गठियोड़ो । अस्सी रो उमर में ई रोज च्यार-याँच मौल रो पैडो करता । कचेड़ी आवण रो शौक हो, इण वास्तै घणी बार दरसन हुवता, बाँ रा । हा, हाय मे छड़ी री जाग्यां लोह रो घोटो राखता, करीब दस-बारै सेर रो । बाँ रो नाम हो, योगानन्दजी ।

“भगवै नै आदेश है”—पण बा नै लोग सिर नवावता वैदगी रा पूतळा समझ'र । इण बात सूँ वै खुद वाकिफ हा । वै कैया करता—“म्है भगवा जेय'र भीख मागणी शुरू करी । एक दिन एक जण भोसो मारियो कै मोटो-तकड़ो जवान है भर माग'र खावै ! इण बात सूँ म्है सीख लीवीं भर वै दिन सूँ ही भीख सूँ पिडो छुड़ावी । हूँ निठलो बैठणआळो थोड़ो ही हो । इण वास्तै वैदगी रो हुनर सीख'र इण शरीर नै पोषण लाग्यो ।”

बाँ नै बात पर बात घणी ऊकतती । वै विचारक हा । बा रा विचार घणा मुल्लयोड़ा हा । वै बहुश्रुत हा । ओछे विचारां रै दायरै मूँ नीसर'र वै विद्याल क्षेत्र मे घूमणआळा जीव हा । हरेक संप्रदाय रै सापु-संता सूँ बाँ रा भेटा हुवता ।

आपरी वैदगी रै बारै में वै कैवता—“श्री वैद भर डाक्टर म्हारी बात काटे । इण वास्तै म्हारे रजिस्ट्रेशन रो सवाल आयो जद म्हनै इणां मूँ

टवकर लेवणी पड़ी। वै म्हनै 'बी-क्लास' में रखावणो चावता, पण म्है सगळां रै सामनै वां नै कीयो कै हूं सगळां री पोत जाणूं हूं। हूं घोडे री कमाई नई खाऊं, म्हारी उकत भूं काम चलाऊं।”

लोग वां रै बारै में कैवता कै बाबोजी भिलावो या संखियो फूंक'र दैवै। इण रो उथळो वै दिया करता—“थे ठा क्यूं नई तगावो कै हूं काई देवू ? पण एक बात जरूर है कै जिण चीज में भारण री सगति नई हुवै वै भेजीवावण री शक्ति किण तरै हुवै ? हां, चूरण-खाटा अर जुकाम ठीक करण आळा गोळी-पुटका हूं नई बणाऊं।”

वां री कैई बाता अजीब लागती। वां रो दवाई देवण रो तरीको तीन लोक सू न्यारो हो। वा री प्रेक्टिस ई अलग ढंग री ही। जद कोई रोगी वा रै खनै पूगतो अर इलाज करावण री बात कैवतो, जणै वै उणरै खानी गौर सू देख'र पूछता—“क्यो सगळी आग्यां जाय आयो ? खैर हूं इलाज करीस।” फेर वै उणसूं थोड़ी देर बातचीत करता अर आखर मे पूछता—“दवाई ऊपर घी लेसी या तेल ? घी लेवणो हुवै तो घी-ई-घी लेवणो पड़सी, अर तेल री इच्छा हुवै तो तेल-ई-तेल।”

आ बात सुण'र रोगी सकपकीज जावतो, पण वै कैवता कै घी या तेल नै गळै सू हेठै उतारण री जुम्मेवारी थारी अर पूछो बारै नई आवण देवण री आंटी म्हारी।”

जद कोई पूछतो कै घी खावणो कीकर ? तद वै कैवता कै . खीचडी में, लाफसी में, रोटी मे, दाळ मे, मोठै मे अर थारी भरपूी हुवै तो गुटकै सू। पण एक बात है-कै जीमता अथवा जीमण सू एक घण्टा पैला अर जीमण रै तीन घंटा बाद ताई पाणी पीवण री सख्त मनाई है। इण बात रो पालण करणो बहुत जरूरी है।

एक दफै एक रोगी पूछियो कै तेल किसो लेऊं. जद वां उपछो दियो कै घासलेट अर मोबिल-ओयल जितां. तेमां नै छोड'र हरेक तेल चलै, जिण भूं कपड़ो चीकणो हुय जावै। कारण साफ है कै घापा नै तो

कपड़ो (शरीर मायलो भाग जिको कपड़ो ई है एक तरै सू) चीकणो करणो है ।

एक बार एक जण पूछियो कै दूध पीऊं तो ? पण वै भट बोलिया—  
 “पनै ठा हवेला कै गळनै सू चावै जित्तो दूध छानलो, पण गळणो चीकणो नई हवे मर धी जे पावानों ई छाणां तो गळनी भट चीकणो हुय जावै ।  
 इण वास्तै धी लेवणो चाईजै ।”

वां री दवाई ऊपर खान-गान में ऊपर बतायोड़ी बातों रै सिवाय की परहेज नई हो । खटाई-गुड री मनाई वै नई करता । वै कैवता कै म्हारी दवाई ऊपर कैरी रो भचार ई भलाई खावो ।

दवाई देवणी सुह करियां सू पैला वै फीस रै नांव पर एक लोट लेवता, भूंगो-छम्म-बिच्छू खायोड़ो ( सो रुपियां आळो ) ।

वा रै हाथ मे जस हो । वै रोगी नै दवाई रोवण रो तरीको ई समभावता । दवाई रै गोळं भांय सू एक गोळी लेय'र पैलां खुद खाय'र बतावता, फेर रोगी नै देवता । एक दफे वा एक बदहजमो रै रोगी रो इलाज करियो । दवाई देवण सू पैला, वै नै पूछियो कै वो धी री किसी मिठाई खावणी आवै । वै कैयो कै खावणी तो घणी ई मोतीपाक चाऊं, पण हणै कुण खवावै ? आ सुण'र वा कैयो कै एक खूमचो बडो मोती-पाक रो छलवाय लै, सवायै धी रो । म्हारी दवाई मोतीपाक ऊपर ई दिरीजसी ।

वै कैवता कै रोगी नै जिकी चीज रो सीक हूवै वा ई चीज देवणी चाईजै । कारण कै टीक हुया पछे वो वा चीज खावण री इच्छां करसी ज मर जे कदास पछे खायां नुकसाण हुय जावै जणै ? इण वास्तै पैलां सू ई वा चीज खवावणी ।

जीमती टेम या जीम'र बाद में पाणी नई पीवण रै चारें में वै तरक देवता कै कवै नै गिटण नै जित्तै पाणी'री जरूरत हूवै उतै रो जुगाड़ तो

प्रकृति हाफे ई कर देवै— कवै नै चावतां-चावतां गिटण लायक कर देवै ।  
अर देखो तो सई के इण बात रो ग्यान तो जिनावरा तक नै हुवै, खावतो  
वेळा वै पाणी नई पीवै ।

वै कैया करता के मिनख हाफे मरै । बीमारी-सीमारी मे ई जित्तै  
ताई बणै उतै ताई मूँडो चलावतो ई रवै । इत्ती अकल तो डाढां में ई  
है के थोड़ी-सीक बीमारी हुवता ई वै चारै-पाणी में मूँडो नई मारै । गाय  
नै जे मुवाळो हुय जावै तो वा बाटो खावणो बंद कर देवै, चरणो तो बंद  
करे ई ।

वै कैवता के पैलां आदमी माचै नै भालै अर फेर माचो आदमी नै  
पकड़ लै ।

वै कैया करता के आदमी उतै ताई जीवै जित्तै वो मरणै रो मन मे  
नई लावै । एक बार वै एक रोगी नै देखण नै गया । वो केई दिनां सूं  
बीमार हो । वै, वै खनै बैठ्या अर बातचीत करतां थका पूछियो—“काई  
खावण-पीवण रो मन मे आवै ?”

“हैं ... महाराज, म्हारी कोई इच्छा कोनी ।”

“कई पैरण-ओठण रो ?”

“नही महाराज !”

“कोई खेल-समासो देखण रो या ओर कोई इच्छा ?”

“अबै काई देवा ? .. लवकड तो मसाणा में गया ।”

ओ उथळो मुण'र वै उठै मूँ उठिया अर पाधरा बारै गया परा । वै रै  
धरमाळा सागै गया अर दवाई रो बात पूछी । वा भट कैयो—‘म्हारी  
दवाई कईं काम नईं कर सकै, अबै । जिण आदमी रो मसार रो कईं  
चीज में ई प्रागक्ति कोनी अर जिको घा बात भाल बैठियो के अबै म्हनै  
मरणो है, वै नै अबै जुण खंचाय सकै ?”

आ कैय'र वै आपरै पालन-मुबालन गया ।

योगानन्दजी की विशेष जीमता अर कैवता कै ओ सरीर तो बोरी है, इणनै तो भरता जावो जे बिना सहारे रै खडो करणी हुवै तो । आपरै जीवन री एक घटना बां सुणाई । बां कई कै हूं जद जवान हो तो घूमण रो शोक हो । रोटी खाय'र एक गाव सू दूरै गांव गयो । दूरी घणी ही । सिइया पड़गी ही । अंधारै में हूं गांव री काकड़ ऊपर पोचियो । एक झूंपड़ रै वारै खडो हुयो अर पाणी मांगियो । झूंपड़ रै घणी पाणी पायो । पण पाणी पायो अघूरो । म्हे वाल्टी भरियो पाणी जद पी लियो तो वो दीड़ियो उठै सूँ अर केई जणा नै सागै लायो । बा डरतां-डरता म्हारै हाय लगायो । हूं समझ्यो, इण वास्तै म्हे कैयो कै डरो मतीना, हू भूत-पलीत नई हूं । धारै जिसो भिनख हूं । तिम घणी ही, इण वास्तै पाणी कई विशेष पीयो है ।

योगानन्दजी दुनिया घणी देखो ही । भारत-भू री यात्रा बा री घाप'र कियोडी ही, इण वास्तै वै पक्का हा । पण वै कचेड़ी नै ग्यान पावण री जाग्यां बतावता । वै कैवता कै वकील गीता रै ग्यान सूँ पूरण हुयोड़ा हुवै । वै गैराई सूँ श्रीकृष्ण रै उपदेश नै जीवन मे उतार'र जाणै कचेड़ी भावै । देखो तो सई कै जे केई नै ई फांसी री सजा हुवै तो वकील भट कै देवै कै अपील कर देसां, डर मत । कई कोनी । वै तो जाणै निरलेप हुवै । कचेड़ी री तो दुनियां ई अलग है ।

वै कैवता कै जिकी भाषा भण'र सीलीजै वै रै भूलण रो डर हर टैम रैवै, इण वास्तै वै भाषा नै धोलणी पड़ै अर धम्यास करणी पड़ै, पण मातृभाषा कदैई नई भूलीजै । “ऊं ? ऊं लोटो । ऊं ? ऊं धाळी । ऊं ? ऊं मां ।.....” नै चावै किताई धरमा बाद पूछ लो, याद ई रैती ।

योगानन्दजी एक ह्वेनी खरीदी अर वै मे रैवग लाग्या । एक बार एक जणै तानो कतियो जद बां उयळो दियो—“भगवां लेव'र मंसार रा



दुःख छोड़ीजै या सुख ? म्है-भगवां-लिया है संसार रा-दुःख छोड़ण-नै;  
इण वास्तै दुःख-दुःख छोड़ दिया ।”

वै डरता केई सून ई कोनी । खरी कैवण मे वै अचूक हा । वै कम  
बोलता, पण बोलता जणै सुणण आळो वासूं प्रभावित हुयां बिना नई  
रैवतो । एक दफे किणी वां नै पूछियो कै घोळा कथो आवै ? वै हसिया अर  
कैयो कै मायै नै धणो रगड़ियां सून घोळा आवै । जिको मायै सून काम ई नई  
लेवै वै रै घोळा नईं दोसै अर घोळा सून किसो बुढापो गिणीजै । भेड़ रै  
जलम सून ई घोळा हुवै अर बकरी रै मरै इत्तै ई घोळा नईं हुवै ।

जीवण रै आखरी दिनां मे वै निरल्लेप हुयै रै वण लाग्या । आपरी  
जायदाद सून मोह हटायै रै वै निजोखवा हुयग्या अर दो-एक दिना री  
साधारण हारारत सून ई इण संसार सून विदा हुयग्या ।



## सेठ

“दोय घड़ी तो रतन सेठ वण ज्याव—” आ बात बूढ़ा-बड़ेरा सीख देवण नै बह्या करै है। वै सेठजी जिसो दानी अर उदार बणण री बात रै-सारी ई बां रा कई पुराणा किस्सा ई बतावै।

सेठ सेठ ई हा। गंठियोडो शरीर, गंठ भरणो रंग, केसरिया पेचो माथै ऊपर अर डुपटो खान्चै। सवारी खातर बग्यो, टमटम या चौपड़यो।

गरीबां री सुणणआळो, बात री घणी, नेम री पक्को, उखत री पूतळो, सेठाई री सरूप पण सादगी री रूप अर भगवान री भगत हो सेठ। आ बात ई बड़ेरा कवै।

शिवजी रा भगत हा वै—सेठ रामरतनजी। बां नै ‘रतन सेठ’ ई कौया करता।

वै नेम बग्या काशीविश्वनाथजी रा दर्शन करण नै जावता। वै दिनां मन्दिर उजाड़ में हो। दरवाजे बार बस्ती ही कोनी।

एक दफै वै आपै रास्तै पीचिया ई हा कै चार जणां बां री बग्यो नै रोकी। बां रै हाथां मे बन्दूकां ही। सेठ बा नै कह्यो—“कई बात है?”

“म्है चारा गैणां लूटसा।”

“तो इया करो कै आज अढ़ाई बज्यां दीवाणखाने आय जाया, हूं एहाने इण गैणा री कीमत चुकाय देनूँ। डरिया मली ना।”

“अर जे पकड़ाय दिया तो?”

“नई, आ बात घोखैआळी, भावै न भातरै।”

वा चुटेरां बात मान ली । वां कै दियो कै जे गड़बड़ करसी तो काल देख लेसां । एक जण नै दीवानखाने भेजसा ।

भट्टाई बज्यां एक जणो दीवानखाने पूगियो । सेठ उण नै गैणां रें बरोबर रुपिया गिणवाय दिया अर गैणां (सांकळ, पीतरी, धोटी इत्यादि) रो संकळप भर दियो, आपरें गुर नै ।

सेठ गरीबां रो इज्जत राखता । वै, जिण घर मे मरणो या परणो हुवतो, उण घर मे रात नै रुपयां रो गाठडी फेंकवाय देवता । वै भाईपे-आळा रो आर्थिक स्थिति सूं जाणकार हा ई, इण खातर वा रो दोरी बलत मे ई काम सराय देवता ।

एक बार रो बात है कै वां रो विरादरी मे एक डोकसी 'धाम' गई । सेठ वै रें घरें बैसण नै गया । 'बतलावण' कर'र वा कह्यो "म्हारी मा ही जिकी म्हारी मां ई ही । थूं अर हूं, किसा दो हां ? डोकरी रा सुधारा हुवणा चाईजै ।"

"सुधारा हुय जासी, आपरी कृपा सूं ।"

"म्हारें लायक कोई काम-काज हुवें तो बताव ।"

आपरी दया सूं मव ठीक है पण हूं बारियें मे लाफसी बणवाणी चाऊ । 'दूवो' मिलजै सूं बात पार पडै ।"

"दूवो मिल जासी । चिन्मा मती ना कर ।"

जब भाई भेळा हुया तो सेठ उण नै दूवो दे दियो ।

'बारियें' रें दिन, भाई जीमण जावण मे भानाकानी कर रहा हा ।

पण जब सेठ जीमण नै गया परा कैर भाई कियो अड़ता ?

सेठ जीमण बैठिया । कवो लेवत ई कह्यो—"वाह भाई, वाह !

भारी मेवें रो खीचड़ी बनाई है ।" आ कैय'र जीमिया । सै जणा वा रो महानता नै सरावण लागे ।

सेठ छोरा-छण्डा नै ई राजी राखता । वै वालकां मे भगवान रो रूप देखता । दस-बीस दिना रें आतरे सूं वै चोकआळें पाट माथें बैठा-बैठा, छोरा नै बुनावता अर पूछता—"हणै तो गोठ-मछाड़ी करी कोनी ?"

"है बाबाजी ..... पईसा भेळा ..... ।"

"तो आज 'नरसग सामर' माथें गोठ हुमी । सामान उठै पूग

जासो । म्हारै रसोइयै सूं मिल लो । गाडी भाडै कर लाग्यो । पईसा दीवणखाने सूं ले लो ।”

“छोरा राजी हुवंता, फेर वै कैवता “अर म्हाने तो नूतो दियो ई कोनी । फेर हूं भिळै र आऊंला ।”

“आपनै नूतो देवण री ताकत किण में है? आप तो मालक ई हो।”

फेर वै धरै जावता अर रसोइयै नै कैवता—“आज गोठ है छोरां री तरफ सूं । इण खातर चीज चोखी सूं चोखी बणावणी है । धुनै जीमती टैम तो बईं भाय नही सकै इण कारण कासो ई पुरम लियै । हां म्हारी बाई नै ई गिण लियै ।

सेठ जानता हा कै रसोइयै रै भागै-लारै एक विधवा बैन है । इण वास्तै पैला सूं ई वै नै गिण लेवता ।

सेठ साधु-सन्ता री सेवा ई किया करता । एक दिन बां बनै एक साधु गयो अर कह्यो—

“लालन के लाल, मंगवावे भाल

फक्कड़ का हाल भोला भर दे ।”

“किसी चीज चाईजै अर कईं चाईजै, आप साफ-साफ हुकम करो ।”

“जिण चीज सूं चावै, उण सूं ई म्हारो ओ खप्पर भर दे ।”

“भरणो-वरणो हूं नईं समझूं । म्हनै तो आप हुकम फरमाय दो।”

“हूं चाऊं कै म्हारो खप्पर भरयो जावै ।”

“हूं ई निवेदन करूं कै आप तोल अर चीज बतायदो ।”

इण तरै हुज्जत हुवण लागी अर आखर मे साधु आ कैवतो बारै नीसरग्यो—“कोई अव्वलियो आयग्यो इण खोलिये में । पोचियोडो जीव है, पोचियोडो ।”

बात आ ही कै साधु भी महान् हो । जे उण रो खप्पर भरणो सुरू करीजतो तो वो खप्पर भरीजतो कोनी । बा तो परीक्षा ही परीक्षा सेठा री ।

बा री हुण्डी चालती । एक बार वै काशीविश्वनाथजी रा दर्शन करण नै जावता हा । रास्तै में एक याचक मिलग्यो । बा कनै कागद अर कलम ही कोनी अर जबानी कहा मुनीम याचक नै रुपिया देवतो नईं

इण खातर धां एक तरकीब सोची । धां रास्तै सूं एक टीकरी उठाई अर कोयलै सूं लिखिया - १००) ६० दे देना । कः रामरतन ।

वो याचक दीवणमानै गयो पण मुनीम वै नै रुपिया दिया कोनी । वो पूठो काशोविश्वनाथजी रै मिदर पूगियो । सेठ बात सुणी अर रकम १००) ६० रै सारै एक भीण्डी घोर जोड़ दी ।

वो मिनल फेर हवेली पूगियो पण मुनीम फेरुई ई वै ने रीतो काढियो । वो वारै नीसरियो ई हो कै सेठ रो भाई मिलगयो । उण बात समझी अर वै याचक नै रुपिया एक सौ देयर, राजी कर' र, खानै करियो ।

सेठ री जयान जाणै 'सुलो चैक' हो । वै आपरी मा रा अस्त लेय'र हरिद्वार गया । उठै विधि-विधान सूं अस्त पघराया । फेर पण्डे दक्षिणा मागी । वा कैयो—“हुकम फरमावो ।”

“एक सौ एक ।”

“संकोच मत्ती करो ।”

“पाच सौ एक ।”

“फेर ई आप संकोच करग्या ।”

इण बात भायै पण्डे ने इचरज हुयो । वै समझियो कै सेठ ढपोळ-शांख ज्यो बात करै है । वै इण खातर कैयो—“पांच सौ एक, मोकळी रकम है ।”

आ सुण'र सेठ एक हजार एक रुपिया गिणवाय'र भेंट करी पण्डे रै । वो देखतो ई रैग्यो अर धनी आसीसा दीवी ।

मुनीम सेठ नै सिझ्या नै पूछियो कै जे कदास पण्डो एक लाख रुपिया मांग लेवतो जणै ?

“मागिया क्योंनी ?”

“जे मांग लेवतो तो ?”

“तो भ्हारै भाग रा थोड़ी नै मांगतो ? मांगतो तो आपरै भाग रा ई । आपरै भाग में जित्ता लिखियोडा है उतै सूं राई घटै न तिल बढै ।”

मुनीम देखतो रैग्यो जव सेठ कही—

“करमां सार मिले आटो

रामजी रे घर में कईं घाटो ?”

इसा हा सेठ । आब वा रो पार्थिव शरीर इण असार ससार-मे नी है पण यज रूपी शरीर नै कुण नष्ट कर सकै ?

## न्यायमूर्ति

न्यायमूर्ति यैजनाथदासजी रो नांव तत्कालीन बोकानेर रियासत री न्यायपालिका रै इतिहास में अमिट है। वै 'हाई कोर्ट' रा अज हा अर न्याय करणो बां रै जीवन रो ध्येय हो। वै सत-असत रो निरण करण में कीं कसर नी छोड़ता।

वै आपरो जीवन एक सन्यासी ज्या बितावता। एक तारीख नै वेतन री रकम मिलण सूँ पैना ई बां रो पेसकार आधी रकम रा 'मनी-आर्डर फार्म' भर राखतो। बा रकम, आपरै घरै नई पण धर्मार्थ री जाग्यां भेजी जावती।

वै बोली रा भीठा हा। दीमत रा भोळा अर हृदय रा साफ। घरै मिसलिया ले जावता अर पढ़'र पेनी रै दिन ह्यार रैवता। वै मुकदम री सह ताई पोषता।

वै ठीक समै कचेड़ी पूगता। ज्यो ई घडी दस रा टंकोरा बजावती, वै अदालत में कुरसी माथे जाय जमता। पेस्यां करतै समै वै गम्भीर अर शान्त रैवता। बीं बखत रा वकुलाय कहा करै है कै बा कदेई गुस्सो नी करियो।

वै मिफारिस किण री ई नई सुणता। एक बार री बात है कै एक 'महानुभाव' री चीठी बां नै लाय'र चपरासी दीवी। बां, उण चीठी नै बिना खोलियां ई जेब में मेल ली। फेर आप रै काम मे लाग्या। काम निपटाय'र जद चैम्बर मे जावण लागे जद बा चीठी खोली अर पढ़'र जबाब लिखावो—“मुझे अफसोस है कि आज के मुकदमों के फैसले लिखाने

के बाद आपका पत्र मिला गया।" इन तरें वा सई बात लिखाई।

वै एऊला ई बीकानेर मे रैवता। कोठी में वै अर वा रो नोकर रैवता। जद कोइ वा मू मिलण नै जावतो अर बारै मू घटी रो बटन दबावतो तो वै खुद ई वारै नीसरता अर पूछता—“क्यो भइया! कैसे आये?”

“साहब। काल म्हारो.....

बात नै पूरी सुणण मू पैला ई वै कैवताः—“अच्छा, ..” अच्छा भइया! कल दस बजे कचहरी मे मिलना। अच्छा”... आ बात कैवता थका वै फाटक बंद कर'र पूठा कोठी मे परा जावता।

अर बीजै दिन किण री हिम्मत ही कै वा मू जाय'र कचेड़ी मे भेटा लेवतो? वै तो आप रै दिमाग ऊपर किण री ई सिफारिस रो असर हुवण देवता पण नई।

वै दयालु हा पण सिद्धांत रा ई पक्का हा। चोर बा रै घर मे रैवै, आ बात ई वा नै पसन्द नी ही। आपरी कोठी में नोकर अर वा रै सिवाय तीजो जणो कोनी रैवतो। एक वफै वा री घड़ी गुमगी। वा नोकर नै घड़ी रो बावत पूछियो पण वो सफा नटग्यो। वा, वै नै बणो ई समझायो पण वै हामल भरी कोनी। आखर वा फोन कर'र एम०पी० साहब नै बुलाया अर सगळी बात समझाय'र वै नोकर नै वा साथै रवानै करियो। पण अग्रेजी मे बोल'र उणा नै कह्यो कै मारपीट मती ना करीजो। खैर भला।

एस० पी० साहब मोटर मे बैठण लागा इतै मे ई वै नोकर आप री गळती कबूल करली। अर दो ई मिन्टा मे घड़ी बरामद कराम दी। वो जज साहब नै पूछियो—“अबै काई करा?”

“कानून धपना काम करेगा।” जज साहब कह्यो।

फेर वै री चलाण हुयो। वै आप रो जुर्म कबूल कर लियो। इन खातर तफतीश करण आळी हाकम वै नै 'ता बरखास्तगी अदालत सजा दी अर एक सौ रुपिया जुर्मानो करियो। अदम अदामे जुर्मानो, दस दिन री सजा मुणार्ई।'

जज साहव ( बंजनाथदासजी ) वै रो जुर्मानो भरियो अर वै ई दिन उण नै टिंगस कटाय'र उण रै धरै खानै करियो । रास्ते में खर्च करण सारू पच्चीस रुपिया ई हाथ में थमाया ।

वै मुकदमै रा हालत पढ़'र झूठ-सच नै समझ जावता । वै वैसे सुण'र वै ई दिन फैसलो लिखावता । जिन मुकदमै में पैरवी करणआळो वकील नई हुवतो तो वै खुद ई न्याय करण खातर खिलाफ पारटीआळो वकील नै दो-च्यार सवाल पूछता अर फेर फैसलो लिखावता ।

वै कैवता कै 'हाई कोर्ट' साणो फरियाद लेय'र आवणियै री बात तो कम-सूँ कम सुणनी ई चाईजै । दुःखी हुयर ई तो कोई आवै है ।

डाकै रै मुकदमां मे अर 'रेप' रै मुकदमा मे, गंवायां नै आखिर में वै खुद कई प्रश्न पूछता । बां रो मत हो कै जद जनता री आयल अर सम्पति री रक्षा रो विश्वास बां नै नई जमसी तो काम कियो चालमी ? पण साथै री साथै आ बात भी ख्याल में राखणी चाईजै कै किण ई नै झूठो नई फंसायो जावै ।

इण कारण ही वै इसा मुकदमां में कस'र पूरी-री-पूरी सजा देवता, जुर्म साबत हुवण पर । फेर नरमी नई बरतता । अर जे शक हुवतो अर जुर्म साबत नई हुवतो तो वै बरियत रो फैसलो लिखायण मे ई ढील नई करता ।

वै झूठ रो आसरो लेवणआळा सूँ चिगता । एक बार री बात है कै वै एक मुकदमै रो फैसलो लिखाय रैया हा । वै मुद्दायलै री जवाबदेही मंजूर कर'र दावो खारज करणआळा हा मिसल रै आघार ऊपर, पण वै समै ई वकील मुद्दै अर्ज करी कै—“गरीबपरवर ! इण अदालत मे तो मुद्दायलै इण कर्ज रै लेवण सूँ इनकार करियो है. पण दो बरस पैला वै मूनसफी, बीकानेर में, आप रै एक मुकदमै में 'मुफ्तसी' री दरखास्त दी ही, जिनमें मुद्दै रै इण कर्ज री रकम रो भी इन्द्राज करियो हो अर बयान मेई इण कर्ज नै मानियो हो, वै मुकदमै में ।”

आ सुण'र जज साहव फैसलो लिखावणो रोक दियो, सब नै उठे रोक लिया, अर हेठ'री अदालत री बा मिमल माफसखाने सूँ मंगाई, बी



बखत ही तलब कर'र । मिसल आई । वां देखी अर मुद्दायलै रा हुयोडा बयान पढ़िया । फेर भट, वै नै ऊपर बुलायो, आपरै खनै, डायस ऊपर । बुलाय'र बयान रै हेठै वै रा दस्तखत देखाय'र पूछियो—“ ये दस्तखत तुम्हारे हैं ? ”

मुद्दायलै दस्तखत देखिया तो वै रै पगां हेठै मूँ जमीं खिमकण लागी । वो चुप रियो ।

“बोलो, अगर तुम्हारे दस्तखत नहीं हैं, तो फर्जी दस्तखत बनाने वाले मुन्सिफ को जेल भेज दूंगा । मैंने तय कर लिया है कि आज या तो मुन्सिफ को जेल भेजूंगा या तुम्हें ।”

वो डरग्यो । सई बात तो सई ई रैवै । वै हामस भरी, जद जज साहब भट कागज लेय'र वै रा बयान लिखिया, हलफ दिराय'र । जबाब दावै रै दस्तखतां नै भी वै खनै हकराया ।

वै नै हकारना पड़िया आपरा बयान अर नटतो ई क्रियां ? अदालत में हुयोडा बयान हा, अर वा वकील साहब री मौजूदगी में ई हुयोडा हा।

बयान लिख'र दोनों पारटिया रै वकीला नै जिरह रो मौको दियो पण जिरह मे कईं पूछता ? बात तो सगळी साफ हुयगी हो । इण वास्ती वा वापस फैसलो लिखावणो शुरू करियो—

“मैं दावा खारिज करने वाला था कि मेरा ध्यान मुद्दायले के दूसरे मुकदमें की ओर आकर्षित किया गया । इन्साफ के लिये मैंने मिसल तलब करके कार्यवाही की । .... अतः मैं दावा मुद्दई खर्चें समेत डिगरी करता हूँ । ....”

एक बार इसी ई पेचीदो मामलो वा रै सामने आयो । एक मुद्दई नीचै री अदालत मे दावो करियो । दावो स्वके री बिनाय पर हो । मुद्दायलै हेठै री अदालत मे कर्ज सू इनकार करियो अर स्वको तकमील करण री बात मूँ ई कतई इनकार करियो । सबूत मुद्दई रै जिम्मे हो । मुद्दई धाप रा वयान दिया अर दो गवायां रा बयान ई कराया । मुद्दायलै आप री तरफ मूँ आपरा बयान दिया अर एक ‘हेण्ड - राइटिंग एक्मपर्ट रा

बयान कराया । वैं मुद्दायलैं रा दस्तखत स्वकें ऊपर नईं हुवणा बताया । मुद्दई ई आपरी तरफ सूँ 'एक्सपर्ट' सनैं जांच कराई पण वैं ई सांगी बात बताई जिकी मुद्दायलैं रैं 'एक्सपर्ट' बताई ही । इण वास्तैं वैं री गवाई नईं कराई गई ।

इण हालात में दावो खारिज हुवतो ई । खैर साय, मुद्दई अपील करी । न्यायमूर्तिजी सुणी । हेठैं री अदालत मुद्दई अर उण री गवाया ऊपर गसत बयानी रैं कारण दफा १६३ ता० हिन्द रैं तहत मुकदमो चलावण री बात ई लिखी ही, इण वास्तैं अपील करणी जरूरी ही ।

अज साहब वैंस सुणी अर फैसलो लिखायो—“इस बात में शक नहीं है कि मुद्दई की जेब से रुपये निकलकर मुद्दायलैं की जेब में पहुँचे । पर यह बात सच नहीं कि दस्तखत मुद्दायलैं के हो । मुद्दायलैं ने मुद्दई के विश्वास का फायदा उठाकर गड़बड़ की है अतः अपील इस हद तक कि 'दावा मुद्दई डिगरी हो'—खारिज की जाती है और इस हद तक मजूर की जाती है कि दफा १६३ ताजीरात हिन्द के तहत मुकदमा न चलाया जावे । खर्चा फरीकन अपना अपना भुगतें । ... ”

इण फैसलैं री खरचा कई बार 'बार-रूम' में हुवें । इण फैसलैं में अज साहब रैं सैं ताईं पूगण री बात कहीजें । कारण ओ हो कै मुद्दई अर मुद्दायलो जिंगरी भायल्ला हा । मुद्दायलो एक वकील साहब री मुंसी हो । वो कचेडी में रमियोडो हो अर मुद्दई हो भोलो-भालो । वो मुद्दायलैं साथै कचेडी जरूर जावतो, मोने-टोके ।

मुद्दायलैं, मुद्दई कनैं कई बार रुपिया उधार लिया अर चुकाय दिया वैं नै । एक दफै एक हजार रुपिया लिया एक मईनै रैं वाई सूँ । वैं दक्को लिख'र साथ दियो मुद्दई नै । मुद्दई आप कनैं राख लियो ।

तीन-चार मईनां बाद वैं तगादो करियो तो मुद्दायलो आजकाळ करण लागो । वो टाळतो रैंयो अर आखर में वां रैं बोच बोल-चात हुयगी । बात भलगी । अर मुद्दायलैं कैंयो —“लाल कोयल्ली सीवाय राखे ।”

मुद्दई वकील री भारफत नोटिस दियो, एक हफतें में रुपिया चुकावण री, पण रुपियां री जबाब जाम्या आयो इनकारी री ।

मुद्दई दावो करियो । कारवाई हुई अर दावो खारिज हुयो ।

असली बात आ ही कै मुद्ई रुपिया देय'र मुद्दायल नै कैयो कै  
 रुक्को लिख दे । वै रुक्को लिखियोड़ो—पूरो मुकम्मिल—लाय दियो ।  
 पण वो रुक्को वास्तव में मुद्दायल रै हाथ सँ लिखियोड़ो हो कोनी ।  
 वै किण ई दूसरै कने लिखायो हो । अर दस्तखत ? दस्तखत ई किण ई  
 बीज रै हाथ सँ करायोड़ा हा । मुद्ई विचारो अविस्वास किया करतो ?  
 वो विस्वास में आयग्यो । वै नै कईं ठा ही कै वो उण रै साथै इसी  
 दितासी । वै तो रुक्को लेय'र आपरै बस्तै में मम्भाळ'र राख लियो हो ।

इण तरै न्यायमूर्ति वास्तव में न्यायमूर्ति ई हा ।



## ठाकर साहब

बीकानेर रियामत रा (तत्कालीन) महाराजा गगामिधजी जिण लोगा नै 'जीकारो' देय'र बतलावता, उणा मे ठा० श्री सादुलसिंघजी हा । वै रोडै गाव रा ठाकर हा इण खातर ठाकर साहब रोडैमाळा नाव मू' भी वै ओलखीजता । ऊचै मू' ऊंचै पद मायै रैवता यका भी वै साधु ज्यो जीवन बितावता । गरीबा री मुणार्ई करणमाळा, धमण्ड मू भलगा रैवणिया हा वै ।

गोरै रंग, दोलई शरीर, डीमै कद भर मोल चैरै माळा हा ठाकर साहब । दफतर जावतै पैंट-कोट भर हैट पण धर मे देसी पैरैसै पैरता वै ।

वै टैम भर काम रा पक्का हा । दफतर पीचण री टैम ठीक दस बज्या पण धरै वापस जावण खातर, दफतर रो काम निपटाय'र, निकास हुवतो । घणी धार तो रात री एक-डेढ़ ई बजती । पण उषफणो नई । वै बरिष्ठ मन्त्री हा ।

वै दयालु हा । हर एक मू' भीठा बोलता भर काम करणियै री कदर ई करता । दिनू'गै दफतर (महकमा खास) पहु'च'र कई बार वै हाफै कमरै री बारधा खोलता । उण रे इण काम नै देख'र 'हैड बाबू' कुढ़तो भर चपरासी रै खिलाफ कारवाई करण री बात कैंवतो पण ठाकर साहब ज्यलो देवता—“चपरासी देर मू' भावै इण बात मे वां रो काई कसूर है ? वापडो रात री दो बज्या धरै पहु'चै । फेर टुकड़ो खाय'र पड़ जावै । जद वो दिनू'गै कियां हाजर हुसी नव बज्यां ?”

वै कामवसु नई रैवता । एक दिन वा घटी बजाई । चपरासी कोई आयो कोनी, इण खातर वै खुद ई लोटो लेय'र प्याऊ मायै गया अर हाथ घोय'र जळ सूं लोटो भरियो अर पीवण लाग्या । फेर लोटो भर'र पूठा आया । वा रो 'हेडवावू' हक्को बक्को रैग्यो । पण वा सान्ति सूं कैयो—  
 "थै ई जळ पीवो ।" आ कैय'र वो लोटो उण री मेज मायै मेल दियो ।

दफतर मे वै काम मे ई लाग्योडा रैवता । उण दिना महकमा खास मे मन्त्रिया खातर 'थाळ' री व्यवस्था हो, राज री तरफ सूं । दम सिगरेटा ई रोज मिलती ही पण वा ना तो कदई 'थाळ' मांगायो अर ना ई सिगरेट ली ।

वै, बाबुवा अर चपरास्या सूं नाराज नईं हुवता। वै क्रोध जाण करता ई कोनीं । वां रै विभाग रो कोई वावू या चपरासी बीमार हुवतो तो वै खुद वै री हकीकत पूछता । जे कदास वै रो इलाज ठीक नही हुवतो तो वै उण नै अस्पताल मे भर्ती करावता अर पी एम. ओ. साहव ने भोझा-वण ई दे देवता । वै उण नै कैवता कै छुट्टी री चिन्त्या करण री जरूरत कोनी, इलाज ठीक सर कराये ।

वै भूठ बोलणियै सूं चिढ़ता । जे कदास कोई छुट्टी लेवण खातर भूठो कारण लिख देवतो अर वा नै ठा पड़ जावती तो फेर उण नै वै भाड़ हाथा लेवता ।

वा नै वागवानी रो शौक हो । आपरै डेरै रै वाग री वै खुद सार-सभाळ करता ।

मोड़-वड़ाई वा रै आगे-सारी ई ही कोनी । तटक-भडक सूं ई वै अनग रैवता । वा रो हर काम टच रैवतो ।

वै घूमण नै भी जाया करता हा । एक घार री बात है कै वै डेरे सूं निसरीया । थोड़ी दूर टुरिया हुवता कै बोरा री ओडी देली । चोर घेवण भाळी होकरी गनै बैठी हो । वै उठै दूकिया अर पक्का-पक्का चोर टाटण लागी ।

“टाळ मती ना व्हाला” -डोकरी कह्यो ।

“टाळवा लेसूं भर दाम थारै मन माफिक दे देसूं माजी । आ कैय'र पाव भर टळवां बोर वा छाट लिया । फेर वै डोकरी रै कैणै मुजव तीन डबल दिया पण जावती टैम एक चार आनी और फेंक्या घोडी मे ।

वै आपरै विभाग रै कर्मचारिया रै बारै मे जाणकार रैवता । मौकै माथे वां रा हिमायती ई वणता ठाकर साहब । वै ढान हा ढाल वा रै खातर । एक बार वां नै एस० पी० साहब फोन करियो भर कह्यो कै आपरै दफ्तर में काम करण आळै एक बाबू रै घर खिलाफ सी० आई० डी० इन्स्पेक्टर रिपोर्ट कीनी है । रिपोर्ट रै अनुसार वो क्रान्तिकारी है भर क्रान्तिकारियां सूं मेळ राखै ।

“तो आप रिपोर्ट सार्ग वै इन्स्पेक्टर ने हणै ई भेज दो । हूं देख'र आपनै सूचित कर देसूं कै कईं करणो उचित है—” ओ उचळो वो दियो ।

थोड़ी देर बाद वा रै कमरै में वो इन्स्पेक्टर घुसियो भर रिपोर्ट पेस करी ।

वा रिपोर्ट पं० मुरलीधरजी रै खिलाफ ही । वा रै खिलाफ इल्जाम हो कै वै पं० जानकीप्रसादजी बगरहट्ट रै घरा जावै । वा रै खिलाफ खादी पैरण रो ई इल्जामे हो ।

रिपोर्ट पढ़तां ई ठाकर साहब धीरे सूं कह्यो—“हूं तो अब लायक नई रह्यो इण पद पर काम करण रै ।”

“है ..... है सा'ब । .....”

“है सा'ब कोई । जद म्हारै नाक नीचे रहवणियै बाबू रै बारै मे म्हांसू ज्यादा ठा म्हानै है जद हूं महकमा खास मे कियां काम कर सकूं ?”

वो इन्स्पेक्टर नीची नस कियोडो खड़ी रह्यो ।

वां फेर कह्यो—“म्हारो बाबू जानकीप्रसादजी रै घरां जावै पण बयो जावै इण बात री ठा म्हानै है ? ..... जानकीप्रसादजी रा बड़ा भाई वा रा गुरु है । वै नाटक री तैयारी करावै । वै नाटक मण्डली रा उस्ताद है भर म्हारो बाबू नाटक खेलण मे भाग लेवै । क्या सांस्कृतिक कामां में भाग लेवणो गुनाह है ?”

“सा..... हू माफी ....”

“नई माफी रो काई बात है ? अर म्हाने आ ठा हुवेला के खादी तो अठे रो बणियोड़ो सस्तो कपड़ो है जिके सून ई गरीबां रो गुजारो चाले । ये जिके ने खादी कैय'र इल्जाम लगावो वा तो डोवटो है । म्हारे ई डोवटो रो कमीज पैरण नै है” —आ कैय'र कोट हेटे पैरियोडो आपरो कमीज देलायो ।

वो इन्सपेक्टर गिडगिड़ावण लागो । जद वा रिपोर्ट आपरे कने राख'र वं नै रवाने कियो ।

वै कहा करता कै जद, म्हारे विभाग रे लोगा रे दारे मे हूं ई कम जानतो हुईस जद फेर काम हुय लिया । कुण किसो'क है इण बात रो ठा तो साधारण बातचीत सून ई साग जावे ।

वै न्याय करणयाळा हा । यां खनै अपीलां आवती । एक बार एक डोकरी वा नै अरज करी कै वै रे जेठूतें उण रो सगळी जमी हडप ली । वै रो सुणार्डि कठे ई नई हुई । वा इण खातर मिसल मुलाहिजा करी । फेर पेशी रे बकत उण रे जेठूतें नै डाट'र कह्यो — “थूँ खोटा नकशा बणवाय'र पेश करिया है । हू म्हनै अर गजघर दोनां नै जेल भेजसूँ ।”

“हे हजूर .....”

“हजूर-वजूर की नई समझू । हजूर तो लातगढ मे बैठा है । म्हाने तो साची बात बताव ।”

“सा'व..... । हूं फैसलो कर लोस ।” आ कैय'र वा रे पगै पड़ण लागो ।

“म्हारे पगै नई, इण डोकरी रा पग भाल । इण नै राजी कर ।”

वै मिनख फेर डोकरी रा पग पकड़ लिया । डोकरी उण सून राजीपो कर लियो अर आसीस्या देवती उठे सून गई ।

वा नै फुटबाल रो भेज देखण रो शौक हो । फुटबाल रा दूरना-मैण्ट चालता जद वै प्रायः स्टेडियम जाया करता । वै खुद भी तो आच्छा खिलाडी हा आपरे जमाने रा ।

स्टेडियम जावण सून पैला वै सगळो काम निपटाय देवता । उठती चेळा वै हैड बावू नै कंवता — “पाच वजयो है, कई काम हुवे तो बताय

देवो ।” घर जइ काम री तरफ मूँ यो नै हरी भंडी मिल जायती तो वै रवाने हुयता ।

एक दिन वै रवाने हुया ही हा कै हैड बाबू सायाबल्ल मूँ गयो घर एक कागज सामे कर’र कह्यो—“एक कागज पर दस्तगत करणा है, सा’ब ।”

“ओ हणै हणै में कठै मूँ जिलमग्यो ? एक मिन्ट पला ताई तो एक ई कागज कोनीं हो दस्तगत रातर । धरै इप नै धाज-धाज में थोड़ो बडो हुयण दो, कात देगमूँ”—भाज कैय’र वै रवाने हुयग्या ।

वां री बहुत मान हो । उण समै रा महाराज गंगाभिषजी द्विणियै-गिणियै लोगा नै जीकारो देवता हा । घर उण लोगा में ठाकर साहब री नाव ई हो ।

वै अध्यापकां री बहुत आदर करता । मा सरस्वती री पावन मन्दिरा री प्रति वां री हृदय में अगाध अट्टा ही ।

एक बार री बात है कै एक मास्टरजी ( दीनानाथजी ) या री डेर पटावण नै जावणो शुरू करियो । ठाकर साहब वां नै “प्रणाम मास्टर जी” कह्यो । मास्टरजी संकोच कर’र अरज करी, “ठाकर सा’ब, आप म्हारै पिताजी री ऊमर रा हो । आप म्हनै प्रणाम करो, या ... ”

मास्टरजी बाक्य पूरो करता ई हा कै ठाकर साहब बीच में ई बोल’र कह्यो—“मास्टर सा’ब ! आपनै ठा हुवै ला कै हूं यास्टर नोबरस हाई स्कूल में भणियोड़ो हूं ।”

“जी ।”

“अर आप उण हीज स्कूल में अध्यापक हो । आप जिण कुरसी ऊपर बिराजो वा म्हारै सातर पूज्य है । अर हूं वै कुरसी माथे बैठण लायक जलम भर नई बण सकूं । .... हूं वै कुरमी नै भी, आपनै प्रणाम करनै, शीश झुकाऊं हूं । आप वै सरस्वती री पवित्र मन्दिर में साधना करो हो ।” या बात कैय’र वै उठै मूँ टुरण लागे अर टुरता-टुरता फेर “प्रणाम मास्टरजी” कैयग्या ।

आपनै अठै री हलकी नई दीसी—ओ विचार वां री मन में हर बखत रैवतो ।



हार्डिंज साहब होम मिनिस्टर रो चार्ज सम्भाल्ले आपरो कमरो देखियो । गरमो रे भयंकरता अर बिना टाटां रो कमरो । उणा रो माथो ठणवयो । ठाकर साहब उणां रे गत लख्ख्या । वै वखत ई टाटा मंगवाय् के कमरो ठण्डो करवाय दियो । हार्डिंज साहब कृतज्ञता प्रगट करी अर दूसरा मिनिस्टरां रे कमरा रे टाटा नई हुवण रे बारे में पूछियो ।

“म्है तो देसी आदमी हूं । म्हारे खातर गरमी-सरदी सहवणी साधारण बात है । अर टाटा मे रेवण सूं बारे नीसरां जण जुलाम हुय जावै ।”

ठाकर साहब ओ उबळो दे तो दियो, बात सारन खारण पण असल बात था ही कै गंगासिंघजी रे तरफ सूं महकमा खास मे टाटा लगवण रे मनाई ही । अर वै टाटा ठाकर साहब आप रे पईसां सूं खरीद के लगवाया हा ।







